महिला मोर्चा

प्रशिक्षण प्रारूप

पं. दीनदयाल उपाध्याय
प्रशिक्षण महाअभियान 2018

9 789388 310185

भारतीय जनता पार्टी

महिला मोर्चा
प्रशिक्षण प्रारूप

पं. दीनदयाल उपाध्याय
प्रशिक्षण महाअभियान 2018

भारतीय जनता पार्टी
6 ए, दीनदयाल उपाध्याय रोड, नई दिल्ली- 110002
फोन : 011-23500000 फैक्स : 011-23500190

महिला मोर्चा प्रशिक्षण प्रारूप

© **भारतीय जनता पार्टी**
6 ए, दीनदयाल उपाध्याय रोड, नई दिल्ली- 110002

ISBN: 978-93-88310-18-5

2018

मुद्रकः
एक्सलप्रिंट
सी-36, फ्लैटेड फैक्ट्री कॉम्प्लेक्स
झण्डेवालान, नई दिल्ली-110055

आमुख

सर्वाधिक सदस्य संख्या के विश्व रिकॉर्ड के साथ भारतीय जनता पार्टी भारत में सबसे बड़ी राजनीतिक ताकत के रूप में उभरी है। सिर्फ केन्द्र में ही नहीं, बल्कि देश के आधे से अधिक राज्यों में भी आज यह सत्ता में है। ऐसे विशाल जनादेश के साथ आज देश की राजनीतिक व्यवस्था में पार्टी का अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है।

हमारा मानना है कि पार्टी के प्रति देशवासियों का जितना अधिक भरोसा बढ़ता है उतनी ही अधिक पार्टी और पार्टी कार्यकर्ताओं की जिम्मेदारी भी बढ़ जाती है। इसलिए कार्यकर्ताओं की क्षमता में वृद्धि तथा नेतृत्व को भावी जिम्मेदारियाँ संभालने हेतु तैयार करना बहुत जरूरी हो जाता है। इसी विचार को केन्द्र में रखकर पार्टी ने कार्यकर्ताओं एवं पदाधिकारियों के समुचित प्रशिक्षण हेतु ठोस पहल की है। कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण की बात करें तो अपने शुरूआती दिनों से ही भाजपा की यह खास पहचान रही है। इससे पूर्व जनसंघ के रूप में भी कार्यकर्ता प्रशिक्षण पर सदैव जोर रहा। सभी प्रकार के प्रशिक्षण कार्यक्रमों के पीछे मूल सोच यही रही है कि कैसे पार्टी में जमीनी स्तर तक लोकतंत्र को मजबूत किया जाए और किस प्रकार ऐसे प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं की एक मजबूत टीम खड़ी हो जो सेवा एवं समर्पण भाव के साथ देशवासियों की आकांक्षाओं पर खरी उतरे।

भाजपा में राजनीतिक कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण को वर्ष 2015 में उस समय नया आयाम मिला जब ''पंडित दीनदयाल उपाध्याय प्रशिक्षण महाभियान'' की शुरूआत हुई। इस अभियान की सफलता का आंकलन महज इसी बात से लगाया जा सकता है कि राजनीतिक कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण का यह दुनिया का पहला एवं सबसे बड़ा अभियान है। प्रथम चरण में मंडल से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक हजारों प्रशिक्षण कार्यक्रम देशभर में आयोजित किये गये।

प्रशिक्षण के द्वितीय चरण में अब पार्टी के विभिन्न मोर्चों, विभागों एवं स्तरों पर कार्यरत राजनीतिक कार्यकर्ताओं के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं। प्रशिक्षण कार्यक्रम का यह नया

आयाम है। द्वितीय चरण में प्रभावी ढंग से मीडिया को संभालने तथा अलग-अलग प्रकार के मीडिया माध्यमों से व्यवहार करने हेतु कार्यकर्ताओं को विशिष्ट प्रकार का प्रशिक्षण प्रदान करने की भी योजना बनी है।

भा.जा.पा. ने सदा से ही महिला सशक्तिकरण में एक बड़ी भूमिका निभाई है। हमने सदैव विभिन्न महिला सशक्तिकरण आंदोलनों का समर्थन किया और हमेशा महिलाओं से जुड़े सभी मुद्दों पर एक व्यापक दृष्टिकोण सुनिश्चित किया। जब भी आवश्यकता हुई भा.जा.पा. ने महिलाओं के हित में संसद में भी निरंतर दबाव बनाये रखा। यह भाजपा ही थी जिसने भारतीय इतिहास में पहली बार महिला आयोग बनाने में पहल की। नौवीं लोक सभा में बीजेपी ने यह सुनिश्चित किया की महिला आयोग से सम्बंधित अध्यादेश सदन में पेश किया जाए और जल्द से जल्द महिला आयोग का गठन हो। अंततः अगस्त 1990 में, भा.जा.पा. के अथाह प्रयासों के फलस्वरूप, राष्ट्रपति द्वारा महिला आयोग को मंजूरी मिली।

इस पुस्तिका में मुख्य रूप से महिलाओं से जुड़े हमारी मूल दृष्टि, क्षमता विकास एवं आत्मावलोकन, महिला बूथ रचना और चुनाव प्रबंधन, महिलाओं के लिये राज्य एवम् केन्द्र की योजनायें और उनमें महिलाओं की भूमिका, भारतीय नारी के दृष्टि से भारत, राजनीतिक गतिविधियों हेतु सोशल मीडिया का उपयोग आदि के सम्बन्ध में जानकारी संकलित की गयी है। अनुभवी प्रशिक्षकों के साथ विचार-विमर्श के पश्चात् तैयार की गयी इस पुस्तिका में जो जानकारी दी गयी है वह कार्यकर्ताओं और निर्वाचित पदाधिकारियों को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ उनके ज्ञानवर्धन एवं कौशल विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। इस प्रक्रिया में इस पुस्तिका को एक शुरूआत ही मानना चाहिए।

मुझे उम्मीद है कि पार्टी के निर्धारित लक्ष्यों एवं उद्देश्यों को प्राप्त करने में यह पुस्तिका सहायक सिद्ध होगी।

-पी. मुरलीधर राव
(राष्ट्रीय महासचिव)
प्रभारी, प. दीनदयाल उपाध्याय
प्रशिक्षण महाभियान

विषय सूची

1. भारतीय जनता पार्टी का इतिहास एवं विकास 8
पृष्ठभूमि 8
भारतीय जनसंघ का जनता पार्टी में विलय 10
भाजपा का गठन 11
विचार एवं दर्शन 12
उपलब्धियाँ 13
वर्तमान स्थिति 15
भारतीय राजनीति में भाजपा का योगदान 16
लोकतंत्र: विकास एवं रक्षा 17
विचारधारा 17
सुशासन 18
2. सैद्धांतिक अधिष्ठान 19
लोकतंत्र 20
सकारात्मक पंथ-निरपेक्षता एवं सर्वपंथसमभाव 21
राष्ट्रवाद और राष्ट्रीय एकात्मता 22
सामाजिक व आर्थिक विषयों पर गांधीवादी दृष्टिकोण: 22
मूल्य आधारित राजनीति 24
3. विचार परिवार 25
4. राष्ट्र के समक्ष चुनौतियों 28
बाहरी चुनौतियाँ 29
आंतरिक चुनौतियाँ 31
जबरन धर्मांतरण 32

आर्थिक चुनौतियाँ 32
अर्थव्यवस्था से संबंधित सामाजिक मुद्दे 33
सामाजिक मुद्दे 34
कार्यकर्ता विकास 35
5. हमारी कार्यपद्धति 37
व्यवहार पद्धति के मुख्य अंग निम्नानुसार है- 37
कार्यपद्धति के उपकरण 40
कार्यपद्धति के बुनियादी सूत्र 41
6. क्षमता विकास एवं आत्मावलोकन 43
भाषण कला का विकास 48
अनुशासन 51
समय प्रबंधन 51
मीडिया प्रबंधन 53
7. महिला बूथ रचना और चुनाव प्रबंधन 55
चुनाव और बूथ रचना 55
बूथ रचना 63
बूथ के वाली (अभिभावक) 64
बूथ समिति कैसी होनी चाहिये 64
बूथ समिति के कार्य 65
8. महिला केन्द्रित राज्य एवम् केन्द्र की योजनायें और महिलाओं की भूमिका 68
जनधन 70
स्वच्छ भारत मिशन 71
प्रधानमंत्री शहरी और ग्रामीण आवास योजना 72
बेटी बचाओ - बेटी पढ़ाओ 73

प्रधानमन्त्री उज्ज्वला योजना 73
प्रधानमंत्री मुद्रा योजना 74
प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना 74
प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व योजना 75
मातृत्व लाभ 75
महिला सुरक्षा तथा सक्षमीकरण योजना 76
प्रधानमंत्री महिला शक्ति केंद्र 76
वन स्टॉप सेंटर 76
महिलाओंके लिए हेल्पलाइन 76
नौकरीपेशा महिलाओं के लिए हॉस्टल 77
परित्यक्ता महिलाओं के लिए महिला
आश्रम (स्वाधारगृह) 77
राष्ट्रीय आहार मिशन (एनएनएम) 77
मा. प्रधानमंत्री मोदी जी की सरकार की
तरफ चलायी जा रही कुछ अन्य योजनाओं की सूची.... 77

9. मेरे सपनों का भारतः भारतीय नारी के दृष्टि से 79

10. मीडिया/सोशल मीडिया संवाद 84

नियमित संपर्क में रहें 84
पत्रकारों से वार्ता में सतर्कता बरतें 85
तथ्यों पर ध्यान दें 85
डिजिटल मीडिया पर करें फोकस 86
ग्रामीण इलाकों पर ध्यान देने की जरूरत 87
शहरी क्षेत्रों को केंद्र बनाएँ 88

1. भारतीय जनता पार्टी का इतिहास एवं विकास

भारतीय जनता पार्टी एक राष्ट्रवादी राजनीतिक दल है जो भारत को एक सुदृढ़, समृद्ध एवं शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में विश्व पटल पर स्थापित करने के लिए कृतसंकल्प है। भारत को एक समर्थ राष्ट्र बनाने के लक्ष्य के साथ भाजपा का गठन 6 अप्रैल, 1980 को नई दिल्ली के कोटला मैदान में आयोजित एक कार्यकर्ता अधिवेशन में किया गया जिसके प्रथम अध्यक्ष श्री अटल बिहारी वाजपेयी निर्वाचित हुए। अपनी स्थापना के साथ ही भाजपा ने अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय एवं लोकहित के विषयों पर मुखर रहते हुए भारतीय लोकतंत्र में अपनी सशक्त भागीदारी दर्ज की तथा भारतीय राजनीति को नए आयाम दिए। कांग्रेस की एकाधिकार वाली एक-दलीय लोकतान्त्रिक व्यवस्था के रूप में जानी जाने वाली भारतीय राजनीति को भारतीय जनता पार्टी ने दो ध्रुवीय बनाकर एक गठबंधन-युग के सूत्रपात में अग्रणी भूमिका निभाई है। देश में विकास आधारित राजनीति की नींव भी भाजपा ने विभिन्न राज्यों में सत्ता में आने के बाद तथा पूरे देश में भाजपा नीत राजग शासन के दौरान रखी। आज तीन दशक बाद प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में किसी एक पार्टी को देश की जनता ने पूर्ण बहुमत दिया है तथा भारी बहुमत से भाजपा नीत राजग सरकार केन्द्र में विद्यमान है।

पृष्ठभूमि

हालांकि भारतीय जनता पार्टी का गठन 6 अप्रैल, 1980 को हुआ, परन्तु इसका इतिहास भारतीय जनसंघ से जुड़ा हुआ है। स्वतंत्रता प्राप्ति तथा देश विभाजन के साथ ही देश में एक नई राजनीतिक परिस्थिति

उत्पन्न हुई। गाँधीजी की हत्या के बाद राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर प्रतिबंध लगाकर देश में एक नया राजनीतिक षड्यंत्र रचा जाने लगा। सरदार पटेल के देहावसान के पश्चात् कांग्रेस में नेहरू का अधिनायकवाद प्रबल होने लगा। गाँधी और पटेल दोनों के ही नहीं रहने के कारण कांग्रेस 'नेहरूवाद' की चपेट में आ गई तथा अल्पसंख्यक तुष्टिकरण, लाइसेंस-परमिट-कोटा राज, राष्ट्रीय सुरक्षा पर लापरवाही, राष्ट्रीय मसलों जैसे कश्मीर आदि पर घुटनाटेक नीति, अंतर्राष्ट्रीय मामलों में भारतीय हितों की अनदेखी आदि अनेक विषय देश में राष्ट्रवादी नागरिकों को उद्विग्न करने लगे। 'नेहरूवाद' तथा पाकिस्तान एवं बांग्लादेश में हिन्दू अल्पसंख्यकों पर हो रहे अत्याचार पर भारत के चुप रहने से क्षुब्ध होकर डॉ. श्यामा प्रसाद मुकर्जी ने नेहरू मंत्रिमंडल से त्यागपत्र दे दिया। इधर, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कुछ स्वयंसेवकों ने भी प्रतिबंध के दंश को झेलते हुए महसूस किया कि संघ के राजनीतिक क्षेत्र से सिद्धांतत: दूरी बनाये रखने के कारण वे अलग-थलग तो पड़े ही, साथ ही संघ को राजनीतिक तौर पर निशाना बनाया जा रहा था। ऐसी परिस्थिति में एक राष्ट्रवादी राजनीतिक दल की आवश्यकता देश में महसूस की जाने लगी। फलत: भारतीय जनसंघ की स्थापना 21 अक्टूबर, 1951 को डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की अध्यक्षता में दिल्ली के राघोमल आर्य कन्या उच्च विद्यालय में हुई।

भारतीय जनसंघ ने डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के नेतृत्व में कश्मीर एवं राष्ट्रीय अखंडता के मुद्दे पर आंदोलन छेड़ा तथा कश्मीर को किसी भी प्रकार का विशेषाधिकार देने का विरोध किया। नेहरू के अधिनायकवादी रवैये के फलस्वरूप डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी को कश्मीर की जेल में डाल दिया गया, जहाँ उनकी रहस्यपूर्ण स्थिति में मृत्यु हो गई। एक नई पार्टी को सशक्त बनाने का कार्य पण्डित दीनदयाल उपाध्याय के कंधों

पर आ गया। भारत-चीन युद्ध में भी भारतीय जनसंघ ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा राष्ट्रीय सुरक्षा पर नेहरू की नीतियों का डटकर विरोध किया। 1967 में पहली बार भारतीय जनसंघ एवं पंडित दीनदयाल उपाध्याय के नेतृत्व में भारतीय राजनीति पर लम्बे समय से बरकरार कांग्रेस का एकाधिकार टूटा, जिससे कई राज्यों के विधानसभा चुनावों में कांग्रेस की पराजय हुई।

भारतीय जनसंघ का जनता पार्टी में विलय

सत्तर के दशक में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी के नेतृत्व में निरंकुश होती जा रही कांग्रेस सरकार के विरुद्ध देश में जन-असंतोष उभरने लगा। गुजरात के नवनिर्माण आन्दोलन के साथ बिहार में छात्र आंदोलन शुरू हो गया। कांग्रेस ने इन आंदोलनों के दमन का रास्ता अपनाया। लोकनायक जयप्रकाश नारायण ने आंदोलन का नेतृत्व स्वीकार किया तथा देशभर में कांग्रेस शासन के विरुद्ध जन-असंतोष मुखर हो उठा। 1971 में देश पर भारत-पाक युद्ध तथा बांग्लादेश में विद्रोह के परिप्रेक्ष्य में बाह्य आपातकाल लगाया गया था जो युद्ध की समाप्ति के बाद भी लागू था। उसे हटाने की भी मांग तीव्र होने लगी। जनान्दोलनों से घबराकर इंदिरा गाँधी की कांग्रेस सरकार ने जनता की आवाज को दमनचक्र से कुचलने का प्रयास किया। परिणामत: 25 जून, 1975 को देश पर दूसरी बार आपातकाल भारतीय संविधान की धारा 352 के अंतर्गत 'आंतरिक आपातकाल' के रूप में थोप दिया गया। देश के सभी बड़े नेता या तो नजरबंद कर दिये गए अथवा जेलों में डाल दिए गये। समाचार पत्रों पर 'सेंसर' लगा दिया गया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ सहित अनेक राष्ट्रवादी संगठनों पर प्रतिबंध लगा दिया गया। हजारों कार्यकर्ताओं को 'मीसा' के तहत गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया गया। देश में लोकतंत्र पर खतरा मंडराने लगा। जनसंघर्ष को तेज किया जाने

लगा और भूमिगत गतिविधियाँ भी तेज हो गयीं। तेज होते जनान्दोलनों से घबराकर इंदिरा गाँधी ने 18 जनवरी, 1977 को लोकसभा भंग कर दी तथा नये जनादेश प्राप्त करने की इच्छा व्यक्त की। जयप्रकाश नारायण के आह्वान पर एक नये राष्ट्रीय दल 'जनता पार्टी' का गठन किया गया। विपक्षी दल एक मंच से चुनाव लड़े तथा चुनाव में कम समय होने के कारण 'जनता पार्टी' का गठन पूरी तरह से राजनीतिक दल के रूप में नहीं हो पाया। आम चुनावों में कांग्रेस की करारी हार हुई तथा 'जनता पार्टी' एवं अन्य विपक्षी पार्टियाँ भारी बहुमत के साथ सत्ता में आई। पूर्व घोषणा के अनुसार 1 मई, 1977 को भारतीय जनसंघ ने करीब 5000 प्रतिनिधियों के एक अधिवेशन में अपना विलय जनता पार्टी में कर दिया।

भाजपा का गठन

जनता पार्टी का प्रयोग अधिक दिनों तक नहीं चल पाया। दो-ढाई वर्षों में ही अंतर्विरोध सतह पर आने लगा। कांग्रेस ने भी जनता पार्टी को तोड़ने में राजनीतिक दांव-पेंच खेलने से परहेज नहीं किया। भारतीय जनसंघ से जनता पार्टी में आये सदस्यों को अलग-थलग करने के लिए 'दोहरी-सदस्यता' का मामला उठाया गया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से संबंध रखने पर आपत्तियाँ उठायी जानी लगीं। यह कहा गया कि जनता पार्टी के सदस्य राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सदस्य नहीं बन सकते। 4 अप्रैल, 1980 को जनता पार्टी की राष्ट्रीय कार्यसमिति ने अपने सदस्यों के राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सदस्य होने पर प्रतिबंध लगा दिया। पूर्व के भारतीय जनसंघ से संबद्ध सदस्यों ने इसका विरोध किया और जनता पार्टी से अलग होकर 6 अप्रैल, 1980 को एक नये संगठन 'भारतीय जनता पार्टी' की घोषणा की। इस प्रकार भारतीय जनता पार्टी की स्थापना हुई।

विचार एवं दर्शन

भारतीय जनता पार्टी एक सुदृढ़, सशक्त, समृद्ध, समर्थ एवं स्वावलम्बी भारत के निर्माण हेतु निरंतर सक्रिय है। पार्टी की कल्पना एक ऐसे राष्ट्र की है जो आधुनिक दृष्टिकोण से युक्त एक प्रगतिशील एवं प्रबुद्ध समाज का प्रतिनिधित्व करता हो तथा प्राचीन भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति तथा उसके मूल्यों से प्रेरणा लेते हुए महान 'विश्वशक्ति' एवं 'विश्व गुरू' के रूप में विश्व पटल पर स्थापित हो। इसके साथ ही विश्व शांति तथा न्याययुक्त अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था को स्थापित करने के लिए विश्व के राष्ट्रों को प्रभावित करने की क्षमता रखे।

भाजपा भारतीय संविधान में निहित मूल्यों तथा सिद्धांतों के प्रति निष्ठापूर्वक कार्य करते हुए लोकतांत्रिक व्यवस्था पर आधारित राज्य को अपना आधार मानती है। पार्टी का लक्ष्य एक ऐसे लोकतान्त्रिक राज्य की स्थापना करना है जिसमें जाति, सम्प्रदाय अथवा लिंगभेद के बिना सभी नागरिकों को राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक न्याय, समान अवसर तथा धार्मिक विश्वास एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता सुनिश्चित हो।

भाजपा ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित 'एकात्म-मानवदर्शन' को अपने वैचारिक दर्शन के रूप में अपनाया है। साथ ही पार्टी का अन्त्योदय, सुशासन, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, विकास एवं सुरक्षा पर भी विशेष जोर है। पार्टी ने पाँच प्रमुख सिद्धांतों के प्रति भी अपनी निष्ठा व्यक्त की, जिन्हें 'पंचनिष्ठा' कहते हैं। ये पाँच सिद्धांत (पंच निष्ठा) हैं-राष्ट्रवाद एवं राष्ट्रीय अखंडता, लोकतंत्र, सकारात्मक पंथ-निरपेक्षता (सर्वधर्मसमभाव), गाँधीवादी समाजवाद (सामाजिक-आर्थिक विषयों पर गाँधीवादी दृष्टिकोण द्वारा शोषण मुक्त समरस समाज की स्थापना) तथा मूल्य आधारित राजनीति।

उपलब्धियाँ

श्री अटल बिहारी वाजपेयी भारतीय जनता पार्टी के प्रथम अध्यक्ष निर्वाचित हुए। अपनी स्थापना के साथ ही भाजपा राष्ट्रीय राजनीति में सक्रिय हो गई। बोफोर्स एवं भ्रष्टाचार के मुद्दे पर पुनः गैर-कांग्रेसी दल एक मंच पर आये तथा 1989 के आम चुनावों में राजीव गाँधी के नेतृत्व में कांग्रेस को भारी पराजय का सामना करना पड़ा। वी.पी. सिंह के नेतृत्व में गठित राष्ट्रीय मोर्चे की सरकार को भाजपा ने बाहर से समर्थन दिया। इसी बीच देश में राम मंदिर के लिए आंदोलन शुरू हुआ। तत्कालीन भाजपा अध्यक्ष श्री लालकृष्ण आडवाणी ने सोमनाथ से अयोध्या तक के लिए रथयात्रा शुरू की। राम मंदिर आन्दोलन को मिले भारी जनसमर्थन एवं भाजपा की बढ़ती लोकप्रियता से घबराकर आडवाणी जी की रथयात्रा को बीच में ही रोक दिया गया। फलतः भाजपा ने राष्ट्रीय मोर्चा सरकार से समर्थन वापस ले लिया और वी.पी. सिंह सरकार गिर गई तथा कांग्रेस के समर्थन से चन्द्रशेखर देश के अगले प्रधानमंत्री बने। आने वाले आम चुनावों में भाजपा का जनसमर्थन लगातार बढ़ता गया। इसी बीच नरसिम्हाराव के नेतृत्व में कांग्रेस तथा कांग्रेस के समर्थन से संयुक्त मोर्चे की सरकारों का शासन देश पर रहा, जिस दौरान भ्रष्टाचार, अराजकता एवं कुशासन के कई 'कीर्तिमान' स्थापित हुए।

1996 के आम चुनावों में भाजपा को लोकसभा में 161 सीटें प्राप्त हुईं। भाजपा ने लोकसभा में 1989 में 85, 1991 में 120 तथा 1996 में 161 सीटें प्राप्त कीं। भाजपा का जनसमर्थन लगातार बढ़ रहा था। श्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में पहली बार भाजपा सरकार ने 1996 में शपथ ली, परन्तु पर्याप्त समर्थन के अभाव में यह सरकार मात्र 13 दिन ही चल पाई। इसके बाद 1998 के आम चुनावों में भाजपा ने 182

सीटों पर जीत दर्ज की और श्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की सरकार ने शपथ ली। परन्तु जयललिता के नेतृत्व में अन्नाद्रमुक द्वारा समर्थन वापस लिए जाने के कारण सरकार लोकसभा में विश्वासमत के दौरान एक वोट से गिर गई, जिसके पीछे वह अनैतिक आचरण था, जिसमें उड़ीसा के तत्कालीन कांग्रेसी मुख्यमंत्री गिरधर गोमांग ने पद पर रहते हुए भी लोकसभा की सदस्यता नहीं छोड़ी तथा विश्वासमत के दौरान सरकार के विरुद्ध मतदान किया। कांग्रेस के इस अवैध और अनैतिक आचरण के कारण ही देश को पुनः आम चुनावों का सामना करना पड़ा। 1999 में भाजपा 182 सीटों पर पुनः विजय मिली तथा राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन को 306 सीटें प्राप्त हुईं। एक बार पुनः श्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में भाजपानीत राजग की सरकार बनी।

भाजपा नीत राजग सरकार ने श्री अटल बिहारी के नेतृत्व में विकास के अनेक नये प्रतिमान स्थापित किये। पोखरण परमाणु विस्फोट, अग्नि मिसाइल का सफल प्रक्षेपण, कारगिल विजय जैसी सफलताओं से भारत का कद अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर ऊँचा हुआ। राष्ट्रीय राजमार्गों का निर्माण, सार्वजनिक वितरण प्रणाली में सुधार, शिक्षा एवं स्वास्थ्य में नयी पहल एवं प्रयोग, कृषि, विज्ञान एवं उद्योग के क्षेत्रों में तीव्र विकास के साथ-साथ महंगाई न बढ़ने देने जैसी अनेकों उपलब्धियाँ इस सरकार के खाते में दर्ज हैं।

भारत-पाक संबंधों को सुधारने, देश की आंतरिक समस्याओं जैसे नक्सलवाद, आतंकवाद, जम्मू एवं कश्मीर तथा उत्तर पूर्व के राज्यों में अलगाववाद पर कई प्रभावी कदम उठाए गये। राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता को सुदृढ़ कर सुशासन एवं सुरक्षा को केन्द्र में रखकर देश को समृद्ध एवं समर्थ बनाने की दिशा में अनेक निर्णायक कदम उठाये गए।

तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी एवं उपप्रधानमंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी के नेतृत्व में राजग शासन ने देश में विकास की एक नई राजनीति का सूत्रपात किया।

वर्तमान स्थिति

आज भाजपा देश में एक प्रमुख राष्ट्रवादी शक्ति के रूप में उभर चुकी है एवं देश के सुशासन, विकास, एकता एवं अखंडता के लिए कृतसंकल्प है।

10 साल पार्टी ने विपक्ष की सक्रिय और शानदार भूमिका निभाई। 2014 में श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश में पहली बार भाजपा की पूर्ण बहुमत के साथ सरकार बनी, जो आज 'सबका साथ, सबका विकास' की उद्घोषणा के साथ गौरव सम्पन्न भारत का पुनर्निर्माण कर रही है। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह के नेतृत्व में भाजपा लगभग 11 करोड़ सदस्यों वाली विश्व की सबसे बड़ी राजनैतिक पार्टी बन गयी है।

26 मई, 2014 को श्री नरेंद्र दामोदरदास मोदी ने भारत के प्रधानमंत्री के तौर पर शपथ ग्रहण की। मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा सरकार ने कम समय में ही अभूतपूर्व उपलब्धियाँ हासिल की हैं। उन्होंने विश्व में भारत की गरिमा को पुन:स्थापित किया, राजनीति पर लोगों के विश्वास को फिर से स्थापित किया। अनेक अभिनव योजनाओं के माध्यम से नए युग की शुरुआत की। अन्त्योदय, सुशासन, विकास एवं समृद्धि के रास्ते पर देश बढ़ चला है। आर्थिक और सामाजिक सुधार सुरक्षित जीवन जीने का मार्ग उपलब्ध करा रहे हैं। किसानों के लिये ऋण से लेकर खाद तक की नयी नीतियाँ जैसे प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना, सॉयल हेल्थ कार्ड, आदि ने कृषि के तीव्र विकास की अलख जगायी है। ये नया युग है सुशासन का। चाहे आदर्श ग्राम योजना हो, स्वच्छता अभियान या फिर योग के सहारे भारत को स्वस्थ बनाने का

अभियान, इन सभी कदमों से देश को एक नयी ऊर्जा मिली है। भाजपा की मोदी सरकार ने 'मेक इन इंडिया', 'स्किल इंडिया', अमृत मिशन, दीनदयाल ग्राम ज्योति योजना, डिजिटल इंडिया जैसी योजनाओं से भारत को आधुनिक और सशक्त बनाने की दिशा में मजबूत कदम उठाया है। जन धन योजना, बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, सुकन्या समृद्धि योजना जैसी अनेक योजनाएं देश में एक नयी क्रांति का सूत्रपात कर रही हैं। भाजपा सरकार ने देशवासियों को विश्व की सबसे बड़ी सामाजिक सुरक्षा योजना का उपहार दिया है।

भारतीय राजनीति में भाजपा का योगदान

- राष्ट्रीय अखण्डता, कश्मीर के भारत में पूर्ण विलय, कबाइली वेश में पाकिस्तानी आक्रमण के प्रतिकार, परमिट व्यवस्था एवं धारा 370 की समाप्ति व पृथकतावाद से निरन्तर संघर्ष करने वाली एकमात्र पार्टी भारतीय जनसंघ या भाजपा है, अन्यथा कश्मीर का बचना कठिन था।

- गोवा मुक्ति आंदोलन, सत्याग्रह एवं बलिदान। बहुत दबाव के बाद ही सरकार ने सैनिक कार्यवाही की।

- बेरुबाड़ी एवं कच्छ समझौते हमारी राष्ट्रीय अखण्डता के लिए चुनौती थे। भाजपा ने इस चुनौती का सामना किया।

- आज भी देश में राष्ट्रीय अखण्डता के मुद्दे उठाना, पृथकतावाद से जूझना एवं इस निमित्त समाज को निरन्तर जाग्रत रखने का काम भाजपा ही कर रही है।

- देश को परमाणु शक्ति सम्पन्न कर भारत पर हमलों की हिमाकत करने वालों को अटलजी की सरकार ने सीधा संदेश दिया।

लोकतंत्रः विकास एवं रक्षा

- प्रथम चरण में जब स्वतंत्रता आंदोलन के सभी नेता सत्ता पक्ष में जा बैठे थे, विपक्ष या तो था ही नहीं या राष्ट्रभक्ति से शून्य वामपंथियों के पास था तब जनसंघ ने चुनौती को स्वीकार किया तथा भारत के लोकतंत्र को भारतीय जनसंघ के रूप में सबल विपक्ष दिया। 1967 में जनसंघ दूसरा बड़ा दल बन गया था।
- चुनाव सुधार के मुद्दे उठाने वाला एकमात्र राजनीतिक दल जनसंघ या भाजपा ही है। लोकतांत्रिक मर्यादाओं को हमारी पार्टी ने बल दिया और उनका उल्लंघन नहीं होने दिया।
- आपातकाल के प्रतिकार की कहानी हमारी लोकतंत्रात्मक निष्ठा को पुष्ट करती है।
- पंडित दीनदयाल उपाध्याय के नेतृत्व में जो विपक्ष उभरा, वही विकल्प बनने में भी सक्षम था। श्री अटल बिहारी वाजपेयी एवं श्री नरेन्द्र मोदी भारतीय लोकतंत्र में विकल्प के नियामक हैं। भारतीय लोकतंत्र के लिए अपेक्षित अखिल भारतीय संगठन एवं नेतृत्व आज केवल भाजपा के पास है।

विचारधारा

- राजनीति केवल सत्ता प्राप्त करने का साधन नहीं है। समाज को अपेक्षित दिशा में प्रगति पथ पर ले जाना भी उसका कार्य है। इसके लिये संगत दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है, जो संगत विचारधारा से प्राप्त होता है। आज भारत के सभी राजनैतिक दल विचारधारा शून्यता के शिकार हैं। भाजपा सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, एकात्म मानववाद तथा पंचनिष्ठाओं की संगत विचारधाराओं के आधार पर संगठन का नियमन कर रही है। शासन की नीति में भी इनका समुचित प्रतिबिम्बन होगा।

सुशासन

- ध्येयनिष्ठ कार्यकर्ताओं की शक्ति एवं सरकार का सुनियमन सुशासन की गारंटी है। छः साल का केन्द्रीय शासन एवं प्रदेशों में भाजपा की सरकारों ने अन्य दलों की सरकारों की तुलना में अच्छा शासन दिया है। गत तीन वर्षों से श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में सकारात्मक सुशासन की प्रक्रिया तीव्र गति से चल रही है। व्यवस्थाओं की पुरानी विकृतियों का शमन करने में अभी भी कुछ वक्त लगेगा।

❍

2. सैद्धांतिक अधिष्ठान

भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सिद्धांतों और आदर्शों पर आधारित राजनीतिक दल है। यह किसी परिवार, जाति या वर्ग विशेष की पार्टी नहीं है। भाजपा कार्यकर्ताओं को जोड़ने वाला सूत्र है–भारत के सांस्कृतिक मूल्य, हमारी निष्ठाएँ और भारत के परम वैभव को प्राप्त करने का संकल्प और साथ ही यह आत्मविश्वास कि अपने पुरुषार्थ से हम इन्हें प्राप्त करेंगे।

भाजपा की विचारधारा को एक पंक्ति में कहना हो तो वह है 'भारत माता की जय'। भारत का अर्थ है 'अपना देश'। देश जो हिमालय से कन्याकुमारी तक फैला है और जिसे प्रकृति ने एक अखंड भूभाग के रूप में हमें दिया है। यह हमारी माता है और हम सभी भारतवासी उसकी संतान हैं। एक माँ की संतान होने के नाते सभी भारतवासी सहोदर यानि भाई-बहन हैं। भारत माता कहने से एक भूमि और एक जन के साथ हमारी एक संस्कृति का भी ध्यान बना रहता है। इस माता की जय में हमारा संकल्प घोषित होता है और परम वैभव में है माँ की सभी संतानों का सुख और अपनी संस्कृति के आधार पर विश्व में शांति व सौख्य की स्थापना। यही है 'भारत माता की जय'।

भाजपा के संविधान की धारा 3 के अनुसार एकात्म मानववाद हमारा मूल दर्शन है। यह दर्शन हमें मनुष्य के शरीर, मन, बृद्धि और आत्मा का एकात्म यानि समग्र विचार करना सिखाता है। यह दर्शन मनुष्य और समाज के बीच कोई संघर्ष नहीं देखता, बल्कि मनुष्य के स्वाभाविक विकास-क्रम और उसकी चेतना के विस्तार से परिवार, गाँव, राज्य, देश और सृष्टि तक उसकी पूर्णता देखता है। यह दर्शन प्रकृति और मनुष्य में माँ का संबंध देखता है, जिसमें प्रकृति को स्वस्थ बनाए रखते हुए अपनी

आवश्यकता की चीजों का दोहन किया जाता है।

भाजपा के संविधान की धारा 4 में पाँच निष्ठाएँ वर्णित हैं। एकात्म मानववाद और ये पाँचों निष्ठाएँ हमारे वैचारिक अधिष्ठान का पूरा ताना-बना बुनती हैं।

(१) लोकतंत्र: विश्व की प्राचीनतम ज्ञात पुस्तक ऋग्वेद का एक मंत्र 'एकं सद विप्रा: बहुधा वदन्ति उल्लेखनीय है। इसका अर्थ है, सत्य एक ही है। विद्वान इसे अलग-अलग तरीके से व्यक्त करते हैं। भारत के स्वभाव में यह बात आ गई है कि किसी एक के पास सच नहीं है। मैं जो कह रहा हूँ वह भी सही है, आप जो कह रहे हैं वह भी सही है। विचार स्वातंत्र्य (फ्रीडम ऑफ थॉट्स एंड एक्सप्रेशन) का आधार यह मंत्र है।

संस्कृत में एक और मंत्र है- 'वादे वादे जयाते तत्त्व बोध:'। इसका अर्थ है चर्चा से हम ठीक तत्त्व तक पहुँच जाते हैं। चर्चा से सत्य तक पहुँचने का यह मंत्र भारत में लोकतंत्रीय स्वभाव बनाता है। इन दोनों मन्त्रों ने भारत में लोकतंत्र का स्वरूप गढ़ा-निखारा है। भारतीय समाज ने इसी लोकतंत्र का स्वभाव ग्रहण किया है। लोकतंत्र भारतीय समाज के अनुरूप व्यवस्था है।

भाजपा ने अपने दल के अंदर भी लोकतंत्रीय व्यवस्था को मजबूती से अपनाया है। भाजपा संभवत: अकेला ऐसा राजनीतिक दल है, जो हर तीसरे साल स्थानीय समिति से लेकर राष्ट्रीय अध्यक्ष तक के नियमित चुनाव कराता है। यही वजह है कि कभी चाय बेचने वाला युवक देश का प्रधानमंत्री बना है और इसी तरह सभी प्रतिभावान लोगों का पार्टी के अलग-अलग स्तरों से लेकर चोटी तक पहुँचना संभव होता रहा है।

सत्ता का किसी एक जगह केन्द्रित होना लोकतंत्रीय स्वभाव के विपरीत है। इसीलिए लोकतंत्र विकेन्द्रित शासन व्यवस्था है। केन्द्र, राज्य, नगरपालिका और पंचायत सभी के काम और जिम्मेदारियाँ बँटी हुई हैं। सब को अपनी-अपनी जिम्मेदारियाँ भारत के संविधान से प्राप्त

होती हैं। संविधान द्वारा मिली अपनी-अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करने के लिए सभी (केंद्र, राज्य, नगरपालिका और पंचायत) स्वतंत्र हैं। इसीलिए गाँव के लोग पंचायत द्वारा गाँव का शासन स्वयं चलाते हैं और यही इनके चढ़ते हुए क्रम तक होता है।

लोकतंत्र के प्रति हमारी निष्ठा आपातकाल में जगजाहिर हुई। 25 जून, 1975 को तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी ने भारत में आपातकाल घोषित कर दिया था। नागरिकों के संविधान-प्रदत्त मौलिक अधिकार भी निरस्त कर दिए गए थे। यहाँ तक कि जीवन का अधिकार भी छीन लिया गया था। तत्कालीन जनसंघ (अब भाजपा) नेताओं को जेलों में डाल दिया गया था और पार्टी दफ्तरों पर सरकारी ताले डाल दिए गए थे। अखबारों पर भी सेंसरशिप लागू हो गई थी।

लोकतंत्र के प्रति अपनी निष्ठा के कारण ही हम (यानि तत्कालीन जनसंघ के कार्यकर्ता) भूमिगत अहिंसक आंदोलन खड़ा कर सके। समाज को संगठित करके एक बड़ा संघर्ष किया। असंख्य कार्यकर्ताओं ने पुलिस का दमन, जेल यातना और काम धंधे (रोजी-रोटी) का नुकसान सहा। इसी संघर्ष का परिणाम था 1977 के आम चुनावों में जनता जनार्दन की शक्ति सामने आई और इंदिरा जी की तानाशाह सरकार धराशायी हो गई।

(२) सकारात्मक पंथ-निरपेक्षता एवं सर्वपंथसमभाव: एक समय पश्चिमी देशों में पोप और पादरियों का राजकाज में अत्यधिक नियंत्रण हो गया था। अगर कोई अपराध करता था तो चर्च में एक निर्धारित राशि का भुगतान करके वह अपराधमुक्त होने का प्रमाणपत्र ले सकता था। नतीजा यह हुआ कि शासन में धर्म के असहनीय हस्तक्षेप का विरोध शुरू हो गया। विरोधियों का तर्क था कि धर्म घर के अंदर की वस्तु है। इस विरोध आन्दोलन से धर्मनिरपेक्षता का प्रादुर्भाव हुआ।

भारत में धर्म किसी पुस्तक, पैगम्बर या पूजा पद्धति में निहित नहीं

है। हमारे यहाँ धर्म का अर्थ है जीवन शैली। अग्नि का धर्म है दाह करना और जल का धर्म है शीतलता। राजा को कैसे रहना और व्यवहार करना है यह है उसका राज-धर्म, पिता की क्या जिम्मेदारियाँ हैं, उसे क्या करना चाहिए, यह है पितृ-धर्म। इसी तरह पुत्र-धर्म और पत्नी-धर्म हैं। इसीलिए भारत में धर्मनिरपेक्षता का अर्थ धर्म से निरपेक्ष हो जाना नहीं है।

भारत में धर्मनिरपेक्षता का अर्थ सर्व पंथ समादर भाव है। शासक किसी पंथ को, किसी भी पूजा पद्धति को राज-पंथ, राज-धर्म या राज-पद्धति नहीं मानेगा। वह सभी धर्मों, पंथों एवं पद्धतियों को समान आदर देता है। हमारा उद्देश्य है, न्याय सबके लिए और तुष्टिकरण किसी का नहीं। इसका व्यावहारिक अर्थ है 'सबका साथ सबका विकास'। हमारे प्रधानमंत्री जी ने कहा है कि हिन्दुओं को मुसलमानों से और मुसलमानों को हिन्दुओं से नहीं लड़ना है, बल्कि दोनों को मिल कर गरीबी से लड़ना है।

(३) राष्ट्रवाद और राष्ट्रीय एकात्मता: हमारा मानना है कि भारत राष्ट्रों का समूह नहीं है, नवोदित राष्ट्र भी नहीं है, बल्कि यह सनातन राष्ट्र है। हिमालय से कन्याकुमारी तक प्रकृति द्वारा निर्धारित यह देश है। इस देश-भूमि को देशवासी माता मानते हैं । उनकी इस भावना का आधार प्राचीन संस्कृति और उससे मिले जीवनमूल्य हैं। हम इस विशाल देश की विविधता से परिचित हैं। विविधता इस देश की शोभा है और इन सबके बीच एक व्यापक एकात्मता है। यही विविधता और एकात्मता भारत की विशेषता है। हमारा राष्ट्रवाद सांस्कृतिक है केवल भौगोलिक नहीं। इसीलिए भारत भू-मंडल में अनेक राज्य रहे, पर संस्कृति ने राष्ट्र को बाँधकर रखा, एकात्म रखा।

(४) सामाजिक व आर्थिक विषयों पर गाँधीवादी दृष्टिकोण जिससे शोषणमुक्त और समतायुक्त समाज की स्थापना हो सके: गाँधीवादी सामाजिक दृष्टिकोण भेदभाव और शोषण से मुक्त समतामूलक

समाज की स्थापना है। दुर्भाग्य से एक समय में, जन्म के आधार पर छोटे या बड़े का निर्धारण होने लगा, अर्थात् जाति व्यवस्था विषैली होकर छुआछूत तक पहुँच गई। भक्ति काल के पुरोधाओं से लेकर महात्मा गाँधी व डॉ. अम्बेडकर को इससे समाज को मुक्त कराने के लिए संघर्ष करना पड़ा। आज भी यह विषमता पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है।

यही वजह है कि अनुसूचित जाति के साथ अनेक प्रकार से भेदभाव होते हैं और उन्हें यह अहसास कराया जाता है कि वे बाकी जातियों से कमतर हैं। शिक्षित और धनवान हो जाने से भी यह विषमता दूर नहीं होती। भारतीय संविधान के रचयिता डॉ. अम्बेडकर ने विदेश से पीएचडी कर ली थी। फिर भी वह जिस कॉलेज में पढ़ाते थे वहाँ उनके पीने के पानी का घड़ा अलग रखा जाता था। भाजपा इसे स्वीकार नहीं करती। हम मानते हैं कि सभी में एक ही ईश्वर समान रूप से विराजता है। मनुष्य मात्र की समानता और गरिमा का यह दार्शनिक आधार है। देश को सामाजिक शोषण से मुक्त कराकर समरस समाज बनाना हमारी आधारभूत निष्ठा है।

किसी एक राज्य या कुछ व्यक्तियों के हाथ में सत्ता के केन्द्रीकरण के अपने खतरे होते हैं और यह स्थिति सत्ता में भ्रष्टाचार को बढ़ाती है। लेकिन गाँधीजी की मांग सही साधनों पर भरोसा करने की भी थी। उन्होंने किसी 'वाद' को जन्म नहीं दिया, बल्कि उनके दृष्टिकोण जीवन के प्रति एकात्म प्रयास को उजागर करते हैं।

महात्मा गाँधी के दृष्टिकोण के आधार पर भाजपा भी आर्थिक शोषण के खिलाफ है और साधनों के समुचित बंटवारे की पक्षधर है। हम इस बात पर विश्वास नहीं रखते कि कमाने वाला ही खाएगा। हमारी दृष्टि में कमा सकने वाला कमाएगा और जो जन्मा है वह खाएगा। हमारा मानना है कि समाज और राज्य सबकी चिन्ता करेंगे।

दीनदयालजी मनुष्य की मूल आवश्यकताओं में रोटी, कपड़ा और मकान के साथ शिक्षा और रोजगार को भी जोड़ते थे। आर्थिक विषमताओं की बढ़ती खाई को पाटा जाना चाहिए। अशिक्षा, कुपोषण और बेरोजगारी से एक बड़ा युद्ध लड़कर ''सर्वे भवन्तु सुखिनः'' का आदर्श प्राप्त करना हमारी मौलिक निष्ठा है। हमारे गाँधीवादी दृष्टिकोण ने यह सिखाया है कि इसके लिए हमें विचार या तंत्र बाहर से आयात करने की जरूरत नहीं है। अपने सांस्कृतिक मूल्यों के आधार पर अपनी बुद्धि, प्रतिभा और पुरुषार्थ से हम इसे पा सकते हैं।

(५) मूल्य आधारित राजनीतिः भाजपा ने जो पांचवाँ अधिष्ठान अपनाया है वह है 'मूल्य आधारित राजनीति'। एकात्म मानववाद मूल्य आधारित राजनीति पर विश्वास करता है। नियमों और मूल्यों के निर्धारण के वायदे के बिना राजनीतिक गतिविधि सिर्फ निज स्वार्थपूर्ति का खेल है। भाजपा 'मूल्य आधारित राजनीति' के निर्माण के लिए प्रतिबद्ध है और इस तरह सार्वजनिक जीवन का शुद्धिकरण एवं नैतिक मूल्यों की पुनःस्थापना उसका लक्ष्य है।

आज देश का संकट मूल रूप से नैतिक संकट है और राजनीति विशुद्ध रूप से ताकत का खेल बन गई है। यही वजह है कि देश नैतिक ताकत के लुप्तिकरण से जूझ रहा है और मुश्किलों का सामना करने की अपनी क्षमता को खोता जा रहा है। जब हम इन पांचों निष्ठाओं की बात करते हैं तो अपने आसपास या देश में घटे कुछ ऐसे प्रसंग ध्यान में आते हैं, जिनसे लगता है कि हम हर स्तर पर पूरी तरह सभी निष्ठाओं का पालन करते हैं, यह नहीं कहा जा सकता। पर, हम यह विश्वास से कह सकते हैं कि ये निष्ठाएँ हमारे लिए प्रकाश-स्तम्भ की तरह हैं। हम सबको यह प्रयत्न करते रहना जरूरी है कि हम अपना जीवन और अपनी पार्टी को इन निष्ठाओं के आधार पर चलाएँ। ❍

3. विचार परिवार

- 1947 में देश स्वतंत्र हुआ, राष्ट्रीय पुनर्निर्माण का विचार अधिक सघनता से करने का शुभ अवसर आया।
- रा.स्व.संघ के व्यक्ति निर्माण का कार्य संघ स्वयंसेवकों द्वारा समाज जीवन के विविध क्षेत्रों में साकार करने का विचार संघ में गतिमान होने का यह समय था।
- 1950 के दशक से इस प्रक्रिया का प्रारम्भ हुआ और संघ कार्यकर्ता धीरे-धीरे सामाजिक जीवन के एक क्षेत्र में स्वायत्त रचना खड़ी करते हुए चलते गये।
- आज की स्थिति में लगभग सभी क्षेत्रों में समान ध्येय एवं विचार-व्यवहार की प्रक्रियायें केंद्र में रखते हुए ऐसे संगठन कार्यरत ही नहीं बल्कि प्रभावी रूप से इस पुनर्निर्माण के कार्य को प्रबल बना रहे हैं।
- इसकी भूमिका बहुत ही स्पष्ट है - राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के व्यापक संदर्भ में ऐसे किसी एक क्षेत्र में - उस क्षेत्र की आवश्यकता तथा स्वरूप के अनुसार जन संगठन खड़ा करके उस क्षेत्र में अपेक्षित परिवर्तन साध्य करने का यह प्रयास है।
- 1949 में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की स्थापना हुई - यह प्रारंभिक प्रयास रहा - उसके पश्चात् एक-एक संगठन का निर्माण हुआ - आज की स्थिति में लगभग 40/42 ऐसे संगठन इस श्रृंखला में विद्यमान हैं।
- रा.स्व.संघ के विचार की पृष्ठभूमि इन संगठनों के सिद्धांत का आधार है-राष्ट्र जीवन का विचार एकात्म भाव से हो, समाजहित सर्वोपरि हो, समर्पित कार्यकर्ता का निर्माण हो, भारतीय परंपरा,

इतिहास राष्ट्रपुरुष इनके प्रजा सम्मान और आदर की भावना हो और जिस क्षेत्र में कार्य खड़ा करना है उस क्षेत्र की समस्याओं को मिटाकर स्वस्थ समाज को साकार करे ऐसी समान भूमिका इस विचार परिवार की आधारशिला है।

- इस विचार परिवार से अपना भावनात्मक संबंध रखकर कार्य करने वाले ऐसे सभी संगठन स्वतंत्र हैं। स्वायत्त है। सबकी कार्यपद्धति संगठन के स्वरूप के अनुसार है और उनका कार्य विस्तार भी बढ़ती मात्रा में दिखाई देता है।
- वास्तव में यह एक अनोखी रचना है – व्यापक रूप से विचारधारा समान है परन्तु भिन्न कार्यपद्धति है। विचार परिवार एक ही है परन्तु नियंत्रण, नियमन और कार्यकर्ताओं का बल अपने-अपने संगठन ने अपने प्रयास से खड़ा किया है।
- शिक्षा, सेवा तथा वंचित समाज के स्थान को कार्यरत संगठनों ने समाजोत्कर्षक बहुत बड़ा कार्य खड़ा किया है। विद्या भारती, वनवासी कल्याण आश्रम, सेवा भारती ऐसे उदाहरण प्रेरक हैं। छोटे-बड़े सेवाकार्य, एकल विद्यालय यह परिवर्तन के प्रतिमान बन चुके हैं।
- विचार परिवार के घटक के रूप में जुड़े हुए विविध संगठन स्वतंत्र और स्वायत्त होते हुए भी सभी में समन्वय रहे, परस्पर-पूरकता रहे और मूल विचार के परिप्रेक्ष्य में विसंगती न रहे ऐसी आज की विद्यमान रचना है।
- बहुत ही प्रभावी रूप से विविध क्षेत्र में सारे संगठन समाज हित में कार्य कर रहे हैं और नेतृत्व की भूमिका में रहे हैं। जैसे कि भारतीय मजदूर संघ आज विश्वभर में होने वाली गणना से क्रमांक एक का संगठन है। अ.भा.वि. परिषद छात्रों के क्षेत्र में सबसे बड़े, अनुशासित संगठन के रूप में विद्यमान है। हिंदुत्व के विचार को क्षेत्र में बड़ा

संगठन विश्व हिन्दू परिषद ने खड़ा किया है।

- विचार परिवार की यह रचना आज स्थिर हो चुकी है। ऐसे संगठनों की भूमिका राजनैतिक सत्ता संपादन की नहीं। राजनैतिक क्षेत्र में राष्ट्रवाद से प्रतिबद्धता रखने वाले दल प्रति मानस तैयार होता है। यह स्वाभाविक परिणाम होगा। लेकिन किसी संगठन के हित तथा कार्यकर्ताओं का उपयोग दलगत राजनैतिक हितों के लिये करने की परंपरा नहीं है।
- कार्य क्षेत्र भिन्न-भिन्न होते हुये भी समाज जीवन की दृष्टि से समान दृष्टिकोण विचार परिवार में स्वाभाविकत: दिखाई देता है जैसे कि समाज का विचार एकात्मभाव से ही हो, समाज जीवन टुकड़ों में बंटा नहीं है तो सभी अंग परस्पर-पूरक है, समरसता यह समाज जीवन के स्वास्थ्य का आधार है, विविधता में एकता का अनुभव है, वर्ण-वर्ग-जाति संघर्ष समाजहित में नहीं है। एक जन-एक राष्ट्र-एक संस्कृति यह समाज जीवन की अनुभूति है, भारतीय समाज मानस मूलत: आध्यात्मिक होने के कारण समष्टि के लिये त्याग की अभिव्यक्ति व्यक्ति मात्र में हो, धर्म कल्पना व्यापक ही है और समाज की धारणा करने वाली है-ऐसे सारे सिद्धांत विचार परिवार के सभी संगठनों ने धारण किये हैं।
- विचार परिवार का यह आविष्कार राष्ट्र के परम वैभव से ही प्रेरित है। मूल प्रेरणा यही है। संगठन के सारे अंतर्गत व्यवहार और कार्यकर्ताओं के परस्पर संबंध सदा स्नेहपूर्ण रहने का मूल कारण समाज ध्येयवाद के प्रति समर्पण का भाव यही है।
- आज समाज जीवन के लगभग सारे क्षेत्रों में ऐसे संगठन कार्य करके एक शक्ति के रूप में संपन्न है। यह शक्ति किसी के विरोध में नहीं, प्रतियोगिता में नहीं या वर्चस्व प्रस्थापित करने के लिये बल्कि राष्ट्रीय पुनर्निर्माण से ही प्रेरित है।

4. राष्ट्र के समक्ष चुनौतियों

कभी सोने की चिड़िया कहा जाने वाला भारत आज चारों ओर से अनेक चुनौतियों से घिरा है। बेरोजगारी, अशिक्षा, कुपोषण, कन्या भ्रूणहत्या, गरीबी जैसी आंतरिक चुनौतियों से जहाँ एक ओर देश को जूझना है वहीं बाहरी चुनौतियाँ भी कम नहीं है। बाहरी चुनौतियाँ पड़ोसी देशों से ज्यादा है, खासकर सामरिक दृष्टिकोण से चीन बड़ी चुनौतियाँ पेश कर रहा है। तो हमारी एकता, अखंडता एवं अर्थव्यवस्था पर पाकिस्तान लगातार चोट कर रहा है।

पड़ोस के देशों से अवैध घुसपैठ भी हमारी राजनीतिक व आर्थिक स्थिरता के लिए बड़ा खतरा है। यूरोप में जिस तरह से शरणार्थी के नाम पर तेजी से घुसपैठ हो रहा है, उससे भारत को सबक लेते हुए संभल जाना चाहिए। ऐसा कुछ देश या आतंकवादी संगठन जान बूझकर करते हैं ताकि हमारी जनसंख्या संतुलन बिगड़े और वे अलगाववाद को हवा दें। बंगाल की सीमा से लगे असम के कुछ हिस्सों में ऐसी ही स्थितियाँ उत्पन्न हो गई हैं।

पाकिस्तान से बड़ी मात्रा में आ रही नकली मुद्रा भी हमारे लिए बड़ी चुनौती है। इससे हमारी अर्थव्यवस्था को सीधा खतरा है। हमारे पड़ोसी मुल्कों की सहायता से चलाए जा रहे हवाला रैकेट के प्रति भी सावधान रहना होगा। हाल ही में देशव्यापी छापों से यह रहस्य खुला कि देश के दुश्मन हवाला कारोबारियों के जरिए हजारों करोड़ रुपये यहाँ से भेज रहे हैं। आतंकवादी समूहों, हवाला का कारोबारियों और कुछ देश विरोधी गैर सरकारी संगठनों के बीच सांठ-गांठ के सबूत सामने आए हैं। यह हमारी अर्थव्यवस्था को अस्थिर बनाने की साजिश है।

साइबर आतंकवाद का खतरा हमारे लिए बढ़ गया है। आज दुनिया उसी की मुठ्ठी में है, जो पूरी तरह से वायु तंरगों पर नियंत्रण रखता है। चीन और अमरीका लगातार सेटेलाइट आधारित ऐसे-ऐसे यंत्रों का आविष्कार कर रहे हैं जिनके जरिए दूसरे देशों की हर गतिविधि पर नजर रखी जा सकती है। भारत को अमरीका से कम चीन से ज्यादा खतरा है, क्योंकि चीन हाल के वर्षों में कई बार हमारे वेबसाइट को हैक कर चुका है। चीन की आईटी कंपनियों पर अमरीका और यूरोप की जासूसी करने का भी आरोप लग चुका है। आने वाले दिनों में सूचना प्रौद्योगिकी को भी एक दूसरे पर हावी होने के लिए हथियार के रूप में इस्तेमाल किया जाएगा।

विदेशों से सहायता प्राप्त आतंकवाद संगठन, उनके आत्मघाती दस्ते और आतंकवाद के खड़े होते नये प्रारूप भी हमारे लिए खतरे की घंटी हैं।

देश में स्थाई विकास की योजना बने, इसके लिए जरूरी है कि हम अपनी जनसंख्या वृद्धि का सही प्रबंधन करें। बिना किसी योजना या राजनीतिक कारणों से यदि हम जनसंख्या को यूं ही नजरंदाज तो एक दिन स्थिति विस्फोटक हो जाएगी। देश में युद्ध की स्थिति बन जाएगी।

बाहरी चुनौतियाँ

- चीन और पाकिस्तान, दोनों के साथ हमारा सीमा विवाद है और ये दोनों पड़ोसी देश हमारे लिए सीमा व घरेलू मोर्चों पर परेशानियां खड़ी कर सकते हैं।
- चीन और पाकिस्तान दोनों परमाणु संपन्न देश हैं और इन दोनों ने एक वैश्विक शक्ति के रूप में उभरते भारत को चोट पहुँचाने के उद्देश्य से आपस में गहरे राजनयिक संबध स्थापित कर लिए हैं।
- दोनों में से कोई भी देश पहले परमाणु अस्त्र के इस्तेमाल नहीं करने

की घोषणा करने को तैयार नहीं है, जबकि भारत इसके लिए वचनबद्ध है।

- पाक प्रायोजित आतंकवाद के कारण भारत में हजारों लोगों की जानें जा चुकी हैं और अभी भी हमारे देश में पाकिस्तान द्वारा चलाए जा रहे सैकड़ों आतंकवादी मॉडल सक्रिय हैं। पूरा विश्व आज जान चुका है पाकिस्तान आतंकवादियों को उद्‌गम स्थल है और यहाँ से पूरी दुनिया में आतंकियों को भेज रहा है। भारतीय सीमा के आस-पास आज भी पाकिस्तान आतंकवादी कैंप चला रहा है। वह दाउद इब्राहिम और टाइगर मेनन जैसे भारत विरोधी आतंकवादियों को न सिर्फ अपने यहाँ पनाह दे रहा है, बल्कि वह शांति प्रक्रिया के लिए हुए हर तरह के समझौते से मुकर जा रहा है।
- पाक प्रायोजित आतंकवाद मॉडयूल पर सतर्कता बरतने 26/11 हमले के गुनहगारों को भारत लाने जम्मू-कश्मीर में पाकिस्तान द्वारा चलाई जा रही आतंकवादी गतिविधियों पर अंकुश लगाने जैसी कई चुनौतियों के कारण भारत को काफी बड़ी कीमत चुकानी पड़ रही है। हमारी राष्ट्रीय संपत्ति यूं ही जाया हो रही है।
- भारत द्वारा पाकिस्तान को लगातार आर्थिक सहयोग देने और मोस्ट फेवर्ड नेशन का दर्जा दिए जाने के बावजूद पाकिस्तान कभी भारत को यह दर्जा नहीं देता, जिसके कारण भारत का व्यापार बाधित होता है।
- चीन के साथ हमारा सीमा विवाद काफी समय से चला आ रहा है। ऐसा लगता है कि चीन इसे हल करने का इच्छुक ही नहीं है। यद्यपि 1962 के बाद भारत चीन सीमा पर कभी कोई गोली बारी नहीं हुई और ना ही कोई विशेष तनाव ही फैला, उसके बावजूद चीन लगातर हथियारों का जखीरा भारतीय सीमा पर इकठ्ठा कर रहा है और हमेशा हमारे विरुद्ध एक प्रतिस्पर्धा का माहौल बनाए

हुए है। अभी हाल ही में लखवी के मामले में यूएनए में आए प्रस्ताव पर चीन ने पाकिस्तान का ही साथ दिया।

- यद्यपि भारत ने चीन के साथ हमेशा आर्थिक सहयोग की भावना रखी, लेकिन चीन लगातार हमारी आर्थिक हितों को अनदेखा करता रहा, राजनयिक स्तर पर भी और हिंद महासागर के एक देश के रूप में भी।
- चीन लगातार अपनी नौसेना को मजबूत कर रहा है और भारत के सामुद्रिक हितों के लिए खतरा उत्पन्न कर रहा है। यह हमारे लिए एक और बड़ी चिंता की बात है।
- चीन सीमा पर सड़कों को जाल बिछा कर एक तरह से पाकिस्तान और श्रीलंका को मदद कर रहा है। इससे हिंद महासागर में भारत के प्रभुत्व को कड़ी चुनौती मिल रही है।
- जब से केंद्र में भाजपा की सरकार आई है, तब से भारत सोची-समझी रणनीति के तहत नेपाल, भूटान, म्यांमार, बांग्लादेश और श्रीलंका के साथ क्षेत्रीय सहयोग बढ़ाने का लगातार प्रयास कर रहा है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की इन देशों की यात्रा से एक उचित वातावरण भारत के पक्ष में बना है। भारत अब चीन और पाकिस्तान द्वारा संभावित खतरे से निबटने के लिए अपनी सुरक्षा और खुफिया स्रोतों को मजबूत करने के लिए आवश्यक कदम असरदार तरीके से उठा रहा है।

आंतरिक चुनौतियाँ

माओवाद

- पाकिस्तान और चीन से लगातार सहायता प्राप्त कर रहे माओवादी भारत के आंतरिक सुरक्षा के लिए खतरा बन गए हैं।
- माओवादियों द्वारा की गई हिंसा के कारण अब तक हजारों सुरक्षा

बल के जवान और आम नागरिक मारे जा चुके हैं। भारत के लगभग 200 जिलों में फैले अति वामपंथी विचारधारा के इन अतिवादियों के कारण देश का विकास अवरुद्ध हो रहा है।

- ये माओवादी अब पूर्वोत्तर राज्यों के उग्रवादी समूहों के साथ सांठ-गांठ कर साझा हमले की कोशिश कर रहे हैं।
- पूर्वोत्तर में सक्रिय अलगाववादी संगठन म्यांमार और बांग्लादेश के अपने गुप्त ठिकाने से भारत विरोधी गतिविधियाँ चला रहे हैं और उग्रवादी हमले का संचालन कर रहे हैं।

जबरन धर्मांतरण

- धन और बल के सहारे मसीही और जिहादी गतिविधियाँ चलाकर देश की जनसांख्यिकी ढांचे को बिगाड़ने का षड्यंत्र भारत में कई वर्षों से चल रहा है। यह हमारे लिए एक गंभीर आंतरिक खतरा है।
- धर्मांतरण के खेल में देश के बाहर की एजेंसियाँ भी लगी हैं, जो मुक्त हाथ से धन का और गुंडों का प्रयोग कर रही हैं।
- जबरिया धर्मांतरण एक गंभीर विषय है, क्योंकि इससे हमारा भाईचारा और सामाजिक सौहार्द बिगड़ने की आशंका है।
- धर्मांतरण हमारे यहाँ राजनैतिक रूप से एक बेहद संवेदनशील मुद्दा है, क्योंकि भारत की कई राजनैतिक पार्टियाँ या तो धर्म परिवर्तन को बढ़ावा दे रही हैं, या फिर खामोश समर्थन दे रही हैं।
- हमारे कई राज्यों में धर्मांतरण इतना ज्यादा हुआ है कि वहाँ की पूरी तरह बदल गया है। ऐसे राज्यों के लोगों में आक्रोश और गुस्सा है जो कभी भी फट सकता है।

आर्थिक चुनौतियाँ

- वर्ष 2015 का सामाजिक-आर्थिक एवं जातिगत जनगणना सर्वेक्षण यह बताता है कि देश की एक बहुत बड़ी आबादी किस तरह से

गरीबी की जिंदगी जी ने को विवश है।

- 60 साल के कांग्रेस के शासन में 60 फीसदी से अधिक ग्रामीण आबादी बदहाली की स्थिति में है।
- देश की लगभग 75 फीसदी आबादी की मासिक आय 5000 रुपये से भी कम है।
- 30 फीसदी आबादी के लिए आज भी खेती ही एकमात्र जीविका का साधन है।
- परंतु 56 फीसदी ग्रामीण आबादी के पास आज भी कोई भूमि नहीं है।
- लाखों लोग भीख मांग कर गुजारा कर रहे हैं।
- 13 फीसदी से अधिक लोग आज भी कच्चे मकान में रहते हैं।
- 11 करोड़ लोग फटेहाली की स्थिति में हैं।

अर्थव्यवस्था से संबंधित सामाजिक मुद्दे

- भारत में कुपोषित महिलाओं और बच्चों की संख्या काफी अधिक है।
- प्रसव के दौरान मृत्यु की दर भी भारत में काफी अधिक है जो यह बताती है कि लोगों तक स्वास्थ्य सुविधाएँ अभी भी नहीं पहुँच रही हैं।
- भ्रूण हत्या एवं शिशु मृत्यु के कारण लैंगिक औसत में बालिकाओं की संख्या कमती जा रही है। हरियाणा, पंजाब और उत्तरप्रदेश में यह औसत खतरनाक स्थिति तक पहुँच गई है।
- इस लैंगिक असंतुलन को दूर करने के लिए भाजपा ने, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, का अभियान चलाया है।
- ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सुविधाएँ आज भी दूर की कौड़ी बनी हुई

हैं।

- हमें यह ध्यान रखना होगा कि आधुनिकीकरण का मतलब पश्चिमीकरण नहीं है।
- वैश्वीकरण के नाम पर भारत के उद्योगों और यहाँ की परंपरा व संस्कृति को दांव पर लगाया जा रहा है।
- भारत को विदेशी सामानों का गोदाम बनाने के कारण हमारे परंपरागत उद्योग व लघु उद्योग खतरे में पड़ गए हैं।
- परंपरागत रूप से भारत के दस कुशल समुदाय जिन्हें हम सामूहिक रूप से विश्वकर्मा कहते थे और जिनमें बढ़ई, बुनकर, सुनार, लुहार, कुम्हार, चर्मकार, निर्माण मिस्त्री और ठठेरा कहते थे, उनके हाथ से काम छिन रहे हैं और अब वे किसी और रोजगार की तलाश में भटकने को मजबूर हो गए। आवश्यकता है कि फिर से इन्हें प्रशिक्षित किया जाए और भारत सरकार के स्कील इंडिया कार्यक्रम में इन्हें शामिल किया जाए।
- युवाओं के कौशल विकास के द्वारा रोजगार की ओर उन्मुखकर बेरोजगारी की समस्या को दूर करने के लिए गंभीर प्रयास हो रहे हैं। मुद्रा बैंक भी युवाओं में उद्यमशीलता बढ़ाकर इस समस्या के समाधान के रूप में सामने आया है।

सामाजिक मुद्दे

- भाजपा सरकार ने स्वच्छ भारत के लिए क्लीन इंडिया मिशन की शुरूआत की है।
- स्वच्छता के जरिए कई जानलेवा बीमारियों से हम बच सकते हैं।
- गंगा सफाई योजना हमारे देश के लिए गर्व की बात है।
- इस अभियान को देश की अन्य नदियों से जोड़ने की जरूरत है।

- हमारे ऐतिहासिक और पौराणिक शहरों को अतिक्रमण और गंदगी से सुरक्षित रखने की आवश्यकता है।
- ऐतिहासिक और पौराणिक महत्त्व के भवनों और स्थलों की सुरक्षा के प्रति स्थानीय लोगों को जागरूक करना आवश्यक है।
- देश के प्रत्येक नागरिक के लिए स्वच्छ जल पीने के लिए मुहैया हो।
- हर घर बिजली और स्वच्छ पानी भाजपा सरकारों का लक्ष्य हो।
- देश को शत-प्रतिशत साक्षर बनाना भी भाजपा का लक्ष्य है।
- समस्याओं का समाधान सिर्फ कानून बना देने भर से नहीं हो सकता बल्कि इस पर असरदार तरीके से अमल और जनता की भागीदारी सुनिश्चित करना ज्यादा महत्त्वपूर्ण है।

कार्यकर्ता विकास

- हमारी पार्टी 'कार्यकर्ता आधारित जन संगठन है। कार्यकर्ताओं का समुचित विकास ही, स्वस्थ नेतृत्व की गारंटी है।
- सत्तावादी राजनीति कार्यकर्ताओं को परस्पर स्पर्धी बना देती है। इससे कार्यकर्ताओं के संस्कारों का क्षय एवं विचारों का वर्धन होता है। भाजपा का कार्यकर्ता परस्पर सहयोगी है, जिस महान लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये हमारा संगठन बना है, उसे कार्यकर्ताओं की सामूहिकता एवं टीम भावना से ही प्राप्त किया जा सकता है।
- अत: कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण हो, उदाहरणस्वरूप व्यवहार हो तथा उसे समाजशास्त्र व मनोविज्ञान की समुचित जानकारी हो, इसकी व्यवस्था होनी चाहिये।
- कार्यकर्ता के विकास में दायित्व के निर्वहन की निर्णायक भूमि का होती है। इसलिये हर कार्यकर्ता के लिये संगठन में काम होना चाहिये तथा हर काम के लिये कार्यकर्ता उपलब्ध होना चाहिये।

- पूर्व योजना एवं पूर्ण योजना की बैठक कार्यकर्ता की चिन्तन प्रक्रिया एवं निर्णय प्रक्रिया को चालना देती है। अतः हर कार्यक्रम के बाद समीक्षा बैठक होनी चाहिये इससे कार्यकर्ता में आत्मालोचन का भाव जगता है।
- हर कार्यकर्ता कहीं न कहीं टीम का हिस्सा हो तथा कुछ न कुछ उसको स्वतंत्र दायित्व हो, इससे उसमें सामूहिकता एवं नेतृत्व के गुणों का विकास होगा।
- हम 'जन संगठन' हैं कार्यकर्ता को जनभिमुख होने के पर्याप्त अवसर होने चाहिये। आम सभाओं व नुक्कड़ सभाओं को सम्बोधित करना, आंदोलनों को संचालित करना आदि।
- अध्ययन का कोई विकल्प नहीं है। कार्यकर्ता को अध्ययन के लिए प्रेरित करना तथा अध्ययन की व्यवस्था करना जरूरी है। कार्यालय में पुस्तकालय एवं वाचनालय की व्यवस्था कार्यकर्ता के विकास की महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है।
- जिज्ञासा, सहिष्णुता, सामूहिकता एवं सक्रियता कार्यकर्ता के व्यक्तित्व विकास की कुंजी है।

5. हमारी कार्यपद्धति

कार्यपद्धति हमारी विचारधारा की परिचायक है। कार्यपद्धति हमारे संगठन को सन्नद्ध और सशक्त बनाने की एक सुविचारित प्रक्रिया है।

विचारधारा के क्रियान्वयन का एक साधन है हमारी कार्यपद्धति। अगर कार्यपद्धति में कुछ कमियाँ रहती हैं, कार्यपद्धति अपनाने में हमारी कुछ भूल होती है तो उसका परिणाम हमारी विचारधारा के प्रभाव पर भी होता है। इसलिए हमारी कार्यपद्धति हमारी कालजयी विचारधारा को जन-जन तक पहुँचाने की वाहक है।

कार्यपद्धति के दो अंग:

I. सांगठनिक व्यवहार-पद्धति

II. व्यक्तिगत व्यवहार-पद्धति

सांगठनिक और व्यक्तिगत पद्धति का स्वाभाविक उद्देश्य है, संगठन को ताकत देना, बलशाली करना।

विचारधारा संगठन का उद्देश्य है, हमारी प्रेरणा भी है, मगर एक व्यापक, उच्चतर मिशन के लिए हम काम करते हैं तो वह मुख्यत: संगठन के लिए और संगठन के सहारे करते हैं। इसलिए सांगठनिक व्यवहार पद्धति अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है।

व्यवहार पद्धति के मुख्य अंग निम्नानुसार है-

I. **मनुष्यों का संगठन:** स्नेह और परस्पर मित्रता के आधार पर व्यक्तियों को जोड़ने का कार्य। जो जुड़ता है वह जुड़ा रहे इसके लिए करणीय प्रयास। हर सदस्य को कार्यकर्ता और कार्यकर्ता को संगठन का सक्रिय कार्यकर्ता बनाना, यह इन प्रयासों की दिशा है।

इस प्रयास में हमें सभी के प्रति स्वीकार का दृष्टिकोण रखते हुए

उनके अंदर कार्य की प्रेरणा विशुद्ध रूप में सजग रहे और उसी विचारधारा और संगठन के प्रति प्रतिबद्धता बरकरार रहे, यह सुनिश्चित करना पड़ेगा।

एक कार्यकर्ता के नाते हमारी सोच और हमारा आचरण कैसा हो?

- सहज उपलब्धता, सादगी, निर्भीकता, अनुशासित आचरण, विश्वसनीयता, संवेदनशीलता समयानुशासन, वाक्कुशल।
- परनिन्दा, आत्मस्तुति, व्यक्तिगत दुराग्रह, पूर्वाग्रह से बचना।
- पद नहीं, दायित्व का भाव।
- पुराने कार्यकर्ताओं का सम्मान, नए का स्वागत।
- कथनी और करनी में सामंजस्य।
- सफलता और श्रेय सबको, असफलता का दायित्व अपने को।
- स्वयं के प्रति कठोर और दूसरों के प्रति नम्र।
- ज्यादा बोलने व चेहरा देखकर बोलने से बचना।
- अपनी ही न सुनाएँ, दूसरों को भी बोलने दें और उन्हें भी सुनें।

II. **परस्परता:** एक दूसरे के सहारे ही संगठन आगे बढ़ता है। इसलिए मधुर परस्पर संबंध संगठन की पूर्वावश्यकता है। दूसरे के प्रति विश्वास, निरंतर और खुलकर संवाद और हमें एक-दूसरे की सहभागिता मूल्यवान है यह धारणा, यह सब परस्परता के लिए अति आवश्यक है। प्रतिस्पर्धा राजनीति में हमेशा हावी होती है, मगर परस्परता के माध्यम से हम प्रतिस्पर्धा की दाहकता कम कर सकते हैं। स्नेह, सद्भावना और सहयोग परस्परता के मूलाधार हैं।

III. **सामूहिकता:**संगठन के मजबूत नींव का दूसरा नाम है, सामूहिकता। सामूहिकता का मतलब है एक समूह के रूप में हमारे क्रियाकलापों के क्रियान्वयन का विचार। सामूहिकता का सूत्र है 'सबको साथ

लेकर' यानि संगठन के सभी को सहभागिता का अवसर देते हुए। संभवतः हर काम के लिए अलग कार्यकर्ता और हर किसी कार्यकर्ता के लिए एक विशिष्ट कार्य, यह दृष्टिकोण हमें रखना होगा। सामूहिकता का आग्रह हमारे व्यवहार से झलके। 'मत अनेक -निर्णय एक' यह हमारे सामूहिकता का सार है।

IV. संवादः

- मतभेदों के बावजूद, संवाद मतभेदों से बचाता है।
- अनेक मतों के बावजूद एक मत विकसित करने में संवाद की महत्त्वपूर्ण भूमिका है।
- ऊपर की और नीचे की ओर से बराबर के स्तर पर सामान रूप से संवाद।
- संवाद औपचारिक निर्णय लेने में सहायक होता है।
- संवादहीनता अनेक बार भ्रम, अविश्वास व दूरियाँ बढ़ाता है।
- अस्तु, समस्याओं का समाधान संवाद से, संवाददाता से नहीं।
- वार्तालाप, बैठकें, पत्राचार, गोष्ठियाँ आदि संवाद के माध्यम हैं।

V. संपंर्कः

- नियमित कार्यालय आना।
- नियमित व नियोजित प्रवासी कार्यकर्ताओं की योजन व व्यवस्था।
- कार्य के लिए संपर्क के साथ-साथ अनौपचारिक एवं पारिवारिक संपर्क की आवश्यकता।
- प्रवास एवं बैठकें संपर्क के साधन।
- प्रभावी व्यक्तित्व तथा राजनीतिक गतिविधियों का ज्ञान रखने वाला प्रवासी कार्यकर्ता ही समाज में जोड़ सकता है।

VI. अनुशासनः

- अनुशासन का उद्देश्य कार्यकर्ता को संगठन से अलग करना नहीं है। अनुशासन का उद्देश्य उसे संभालना है
- अनुशासनहीनता को रोकने के लिए दल के संविधान में प्रदत्त नियमों का पालन।
- स्वानुशासन का प्रशिक्षण, पालन और सम्मान।

कार्यपद्धति के उपकरण

I. कार्यक्रमः

- संगठनात्मक, रचनात्मक, आंदोलनात्मक।
- सूखा, बाढ़, भूकंप आदि प्राकृतिक आपदाओं में समाज सेवा।
- आम आदमी की आवश्यकताओं जैसे रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार के लिए संघर्ष।
- समाज के स्वयंसेवी संगठनों का गठन और उनमें भागीदारी।
- गोष्ठियों, कार्यशालाओं, प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन।
- ऊपर की इकाई द्वारा जिलाधारित कार्यक्रमों का क्रियान्वयन।
- अपनी इकाई क्षेत्र की जन समस्याओं को लेकर आंदोलन।
- धरना, प्रदर्शन आदि प्रजातांत्रिक एवं अहिंसात्मक आंदोलन।
- सत्तापक्ष एवं विपक्ष की भूमिका के अनुसार कार्यक्रम।
- संगठन, स्थानीय निकायों, प्रान्तीय एवं राष्ट्रीय निर्वाचनों के लिए चुनाव प्रबंधन।
- कार्यक्रमों में कार्य विभाजन, अधिक से अधिक कार्यकर्ताओं की भागीदारी, कार्यक्रम संपन्न होने के बाद समीक्षा और आवश्यकतानुसार सुधार।

II. बैठकें:

कार्यसमिति एवं अन्य समितियों की बैठकों का सकारात्मक वातावरण बना रहे, इस बारे में व्यवहार की आवश्यक सावधानियाँ रखना, बैठक की पूर्व तैयारी, बैठक में लिए गए विषयों को निर्णयों तक पहुँचाना। पार्टी की विभिन्न इकाइयों की बैठकें सामान्यत: कम से कम निम्नलिखित अवधि में होगी–

- राष्ट्रीय परिषद् तथा प्रदेश परिषद – वर्ष में एक बार।
- राष्ट्रीय कार्यकारिणी तथा प्रदेश कार्यकारिणी – तीन महीने में एक बार।
- क्षेत्रीय समिति, जिला समिति, मंडल समिति – दो महीने में एक बार।
- स्थानीय समिति – एक महीने में एक बार।

  बैठकों में सादगी हो, समय निर्धारित हो, विषय तय हो, बैठक लेने वाले के नाम व बैठक में भाग लेने वालों का स्तर तय हो।

कार्यपद्धति के बुनियादी सूत्र

- संगठन के स्वस्पर्शी, सर्वव्यापी, सर्वग्राह्य – सर्वग्राही बनाना।
- प्रत्येक स्तर पर नेतृत्व में सभी वर्गों को योग्य स्थान देना।
- सामाजिक संगठनों, बुद्धिजीवियों, समाज सेवकों, मीडिया आदि से सतत संपर्क व संवाद।
- मीडिया से संपर्क आवश्यक किंतु मात्र छपने के लिए मीडिया के हाथों में खिलाना न बनें।
- कार्यकर्ता का स्थान कर्मचारी और नेता का स्थान मैनेजर न ले।
- प्रत्येक कार्यकर्ता को काम और कार्य के लिए कार्यकर्ता की व्यवस्था।

- हमारे कार्यों में न धन का अभाव रहे और न धन का प्रभाव
- संगठन में पसीना और पैसे में संतुलन रखा जाए वैचारिक एवं सांगठनिक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन।
- संगठन की गतिविधियों में लोकतांत्रिक पद्धति का अनुसरण सर्वानुमति के लिए प्रयास।
- प्रत्येक बूथ में जाना, प्रत्येक गली में घूमना, प्रत्येक दरवाजे पर दस्तक देना तथा प्रत्येक मतदाता से बात करना।
- संगठन, स्थानीय निकायों, प्रान्तीय एवं राष्ट्रीय चुनावों के प्रबंधन की समुचित व्यवस्था।
- चुनाव आयोग द्वारा निर्धारित नियमों का पालन।
- प्रत्याशी चयन के पूर्व व्यापक विचार – विमर्श किंतु प्रत्याशी की घोषणा के बाद विजय हेतु निष्ठापूर्वक प्रयास करना।
- संगठन तथा सरकार में 'एक व्यक्ति एक पद' के सिद्धांत का यथासंभव पालन।

6. क्षमता विकास एवं आत्मावलोकन

कोई समाज कितना सभ्य है, उसकी परख उस समाज में स्त्रियों की स्थिती से होती है। महिला का क्षमता विकास के अनेक आयाम हैं। महिला सशक्तिकरण को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्रों में उनकी भागीदारी के आधार पर मापा जा सकता है। महिलाओं को वास्तव में सशक्त होने के लिए कहा जा सकता है जब महिलाओं के आत्म-मूल्य जैसे सभी कारक, अपने स्वयं के जीवन को नियंत्रित करने का अधिकार, सामाजिक परिवर्तन लाने की उनकी क्षमता को एक साथ संबोधित किया जाता है। महिलाओं के समग्र सशक्तिकरण की आवश्यकता: आरक्षण के माध्यम से राजनीति में महिलाओं की भागीदारी निस्संदेह हाल के दिनों का एक सकारात्मक विकास है। इस प्रक्रिया में भारतीय जनता पार्टी सबसे आगे है। भारतीय जनसंघ से ले कर इस राजनीतिक प्रक्रिया में हमने महिलाओं को आदरपूर्वक स्थान दिया है। महिलाओं को राजनीतिक क्षेत्र में सन्मानपूर्वक स्थापित करने का महान कार्य हमने किया है। आज भी भारतीय राजनीति में महिलाओं की संख्या सर्वाधिक भारतीय जनता पार्टी में है। राजनीति में महिलाओं के जीवन को प्रभावी ढंग से एकजुट करना चाहिए और इस दिशा में सभी प्रयासों को सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए लक्ष्य की ओर ध्यान केंद्रित करना चाहिए जिससे समाज में पुरुष और महिला बलों के बीच संतुलन प्रकट हो सके। किसी भी समाज के आधुनिकीकरण के लिए प्रयासों को सफल बनाने के लिए, महिलाओं को विकास की मुख्य धारा में लाने के लिए जरूरी है। पुरुषों के प्रति पक्षपात किए बिना महिलाओं को समान अवसर प्रदान करके ग्रामीण समाजों में पुरुष और महिला योगदानकर्ताओं के बीच एक आदर्श संतुलन की आवश्यकता है।

ऐसा होने के लिए, महिलाओं को सभी मोर्चों पर – सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक – पर इस तरह से सशक्त बनाने की आवश्यकता है कि वे समाज के विकास को बढ़ाने के लिए सभी प्रयासों में सक्रिय रूप से भाग ले सकते हैं। यदि सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक जैसे जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में समान अवसरों के साथ सशक्त होते हैं, तो महिलाओं को सार्वजनिक रूप से सक्रिय जीवन जीने का विकल्प होगा, जो समाज में सकारात्मक बदलाव ला सकता है। हमें समाज में अनुकूल वातावरण बनाने की जरूरत है ताकि महिलाओं को अपने विचारों को स्पष्ट करने और उनके कार्यों में अधिक उत्पादक बनने के लिए पर्याप्त आत्मविश्वास हो। उन्हें अपने परिवार, समाज और देश के लिए निर्णय लेने में शामिल होने के समान अवसर दिए जाने की आवश्यकता है। पूरे विश्व में समकालीन समाज सामाजिक और आर्थिक विकास के मोर्चे पर परिवर्तन की प्रमुख प्रक्रियाओं के सामने खुल गए हैं। हालांकि, इन प्रक्रियाओं को एक संतुलित तरीके से लागू नहीं किया गया है और पूरे विश्व में लैंगिक असंतुलन को बढ़ाया गया है जिसमें महिला पीड़ित बनी हुई है। महिला सशक्तिकरण की स्थिति पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। इसलिए, हमें एक पूरी तरह से बदल दिया समाज की आवश्यकता होती है जिसमें विकास के समान अवसर उपयुक्त रूप से महिलाओं को प्रदान किए जा सकते हैं ताकि वे अपने पुरुष समकक्षों के साथ सह-अस्तित्व में रख सकें जो एक बड़े अर्थ में समाज के विकास के लिए जिम्मेदार सभी कारकों में समान रूप से योगदान दे। प्रधानमंत्री मोदीजी ने सब का साथ सबका विकास का नारा दिया है उसमें महिलाओं को साथ लेने का और महिलाओं के विकास का संकल्प सम्मिलित है। राजनीति में हमारी इस भूमिका को जानना और इस के अनुरूप हमारा व्यवहार करना, हमारा पक्ष रखना आवश्यक हो जाता है। क्षमता विकास की प्रक्रिया में व्यक्तित्व का विकास, अनुशासन, भाषण कला का विकास, समय

प्रबंधन, मीडिया प्रबंधन, सोशल मीडिया का प्रयोग, आरटीई का प्रयोग ये सारी बाते उस में आती है। इन सारे विषयों के परिप्रेक्ष्य में हमें विचार करना होगा। व्यक्तिगत विकास वैसे तो हम इस शब्द को हमेशा ही अपने गुरुजनों, शिक्षकों और सकारात्मक बातों से जुडी किताबों में पढ़ते आयें हैं लेकिन कभी हमने सोचा है जीवन में इस शब्द की अहमियत कितनी हद तक है। व्यक्तिगत विकास क्या जीवन में आपका बोलने का तरीका, आपके पहनावे का तरीका या आप लोगों से कितनी आसानी से जुड़ते या नेटवर्क बनाते हैं मित्रता करते हैं उसका तरीका है? जी नहीं यह इन चीजों से परे है। आज के दुनिया में जीवित रहने के लिए हर किसी व्यक्ति को हर समय चालक और तर्कशील होना बहुत ही आवश्यक है। सिर्फ आपकी ताकत नहीं व्यक्तित्व भी इसमें एक अहम भूमिका निभाती है।

I. आत्मविश्वास

अपने ऊपर विश्वास रखना पहला कदम है अपने व्यक्तित्व विकास के लिए। अपनी काबिलियत पर कभी भी शक ना कीजिये और हमेशा अपने से स्वयं कहें! मैं कर सकता, ये मेरे लिए है। अच्छी सफलता से जुड़ी प्रेरक और प्रेरणादायक कहानियाँ पढ़ें इससे जीवन में आगे बढ़ने का प्रोत्साहन मिलता है। साथ ही इससे आत्म सम्मान बढ़ता है और व्यक्तित्व में भी निखर आता है।

II. दृष्टी में खुलेपन

अपने अन्दर अच्छा व्यक्तित्व विकास लाने का एक और सबसे बड़ा कार्य है अपने विश्वदृष्टि में बदलाव लाना। दूसरों की बात को ध्यान से सुनें और अपने दिमाग के बल पर अपना सुझाव या उत्तर दें। अपने फैसलों को खुद के दम पर पूरा करें क्योंकि दूसरों के फैसलों पर चलना या कदम उठाना असफलता का एक मुख्य कारण है। हमेशा खुले दिमाग से सोचें और अपने हृदय में दया की भावना रखें।

III. शारीरिक भाषा

व्यक्तिगत विकास के लिए शारीरिक भाषा में सुधार लाना बहुत आवश्यक है। इससे आपके विषय में बहुत कुछ पता चलता है। हर चीज चाहे वह आपका खाने का तरीका हो, चलने का तरीका हो, बात करने का हो या बैठने का तरीका सब कुछ बॉडी लैंग्वेज से जुड़ा है। मनुष्य का शरीर मनुष्य की आत्मा का बेहतरीन चित्र है।

IV. सकारात्मक सोच रखना

सभी जगह सकारात्मक सोच का होना अच्छे व्यक्तित्व विकास के लिए बहुत आवश्यक है। हमारे सोचने का तरीका यह तय करता है कि हम अपना कार्य किस प्रकार और किस हद तक पूरा कर सकेंगे। सकारात्मक विचारों से आत्मविश्वास बढ़ता है और व्यक्तित्व को बढ़ाता है। जीवन में कई प्रकार की ऊँची-नीची परिस्तिथियाँ आती हैं परन्तु एक सकारात्मक सोच रखने वाला व्यक्ति हमेशा सही नजर से सही रास्ते को देखता है। एक सकारात्मक कदम उठाने के लिए हमें सकारात्मक दृष्टि जागृत करने की आवश्यकता है।

V. लोगों से जुड़ना

ज्यादा से ज्यादा नए लोगों से मिलना और अलग-अलग प्रकार के लोगों से मिलना जीवन के एक नये स्तर पर जाना है। इससे जीवन में संस्कृति और जीवन शैली से जुड़ी चीजों के विषय में बहुत कुछ सिखने को मिलता है जो व्यक्तित्व विकास के लिए बहुत ही आवश्यक है।

VI. अच्छा श्रोता बनना

ज्यादातर लोग समझने के लिए नहीं सुनते, वे उत्तर देने के लिए सुनते हैं। क्यों? सही बात है ना। एक अच्छा श्रोता होना बहुत कठिन है परन्तु यह व्यक्तित्व विकास का एक अहम स्टेप है। जब भी कोई आपसे बात करे, ध्यान से उनकी बातों को सुनें और समझें और अपना

पूरा ध्यान उनकी बातों पर रखें। सीधी आँखों से ध्यान दें और इधर-उधर की बातों पर ध्यान ना दें। ज्यादातर सफल व्यक्ति मैं जानता हूँ जो बात करने से ज्यादा सुनते हैं।

VII. खुश रहें, खुशियाँ ही सफलता की कुंजी

दुनिया की हर चीज में खुशी देखने के लिए प्रयास करें। दूसरों के साथ हँसे पर दूसरों पर कभी भी ना हँसे। उल्लासपूर्ण व्यक्ति की हमेशा सराहना की जाती है। हँसना अच्छे व्यक्तित्व का एक हिस्सा है। सफलता खुशी के लिए चाबी नहीं, खुशियाँ ही सफलता की कुंजी है। अगर आप अपने कार्य से खुश हैं, तो आप जरूर सफल बनेंगे।

VIII. विनम्रता व्यक्तित्व अच्छा करने वाला गुण

भले ही आप प्रतिभाशाली हों, बहुत बड़े व्यक्ति हों परन्तु अगर आपके जीवन में विनम्रता नहीं तो आपका व्यक्तित्व कभी अच्छा नहीं हो सकता। बड़ा अहंकार करने वाले व्यक्तियों को कोई पसंद नहीं करता। विनम्रता दोस्त बनाने का सबसे सस्ता तरीका है।

IX- ईमानदारी और सच्चाई

कभी भी किसी को धोका ना दें और भरोसा ना तोड़ें। आपके चाहने वाले आपकी सराहना करेंगे अगर आप ईमानदारी रहेंगे तो। जीवन में विश्वास ही सबसे बड़ी चीज है अगर एक बार वह विश्वास टूटा तो भरोसा करना मुश्किल हो जायेगा। सच्चाई और ईमानदारी को अपना पहला सिद्धांत बनाओ।

X. मुश्किल की स्थिती में शांति

बहुत सारे लोगों का व्यक्तित्व बाहर से देखने में बहुत ही सुन्दर और अच्छा दीखता है लेकिन मुश्किल पड़ने पर उनकी सिट्टी-पिट्टी गुल हो जाती है। इमरजेंसी के समय उनका दिमाग काम नहीं देता और वे हमेशा टेंशन में रहते हैं। वैसे समय में हार मानने वाले व्यक्ति का

व्यक्तित्व अन्दर से कमजोर होता है।

XI. हमारी खुद की विश्वसनीयता होनी चाहिए। इसी के साथ पार्टी और विचारधारा के प्रति समर्पण का भाव होना चाहिए।

भाषण कला का विकास

भाषण कला का विकास यह व्यक्तित्व विकास में एक आवश्यक कदम है। राजनीति हो या सामाजिक संगठन अपनी बाते प्रभावी और असरकारी ढंग से रखना आवश्यक हो जाता है। बहुत लोगों के लिए भाषण देना एक बहुत मुश्किल काम है, स्टेज पर खड़े होते ही पसीना छूट जाता है। हालांकि ये भी सच है कि तीन-चार बार स्टेज से बोलने के बाद आपका ये डर खत्म हो जाता है या कम हो जाता है। वक्ता तो आप बन जाते हैं, लेकिन कुशल वक्ता होना आसान नहीं। कॉरपोरेट हो, पॉलिटिक्स हो, कॉलेज हो, सोसायटी हो या फिर और कोई भी फील्ड, कुशल वक्ताओं की पूछ हर जगह होती है। ऐसा होना मुश्किल जरूर हो लेकिन नामुमकिन नहीं, ड्राइविंग और स्विमिंग की तरह थोड़ी सी प्रेक्टिस और कुछ नियमों को लगातार फॉलो करने से आप अच्छे वक्ता बन सकते हैं, हाँ पर बिना क्रिएटिव माइंड के राह आसान नहीं। मा. नरेंद्र मोदी जैसे नेता मंच पर आते ही उत्साह और जोश से भर जाते हैं, उनका ये उत्साह खोखला नहीं होता, उनका ज्ञान और विषय पर पकड़ उनकी आँखों में चमक की असली वजह होती है। तो जाहिर है आपको जिस विषय पर बोलना है, उसकी पहले से तैयारी बहुत जरूरी है। घबराहट एक ऐसी चीज है जो सबको होती है चाहे वो कुशल खिलाड़ी हो या नौसिखिया, सो उसे अपने ऊपर हावी होने से बचा जाए उतना ही ठीक है। इससे बचने का एक ही तरीका है अभ्यास, क्योंकि तैराकी अगर सीखनी है तो पानी में उतरना ही होगा, किनारे पर बैठकर तैराकी के नुस्खे सीखने से कुछ नहीं होगा। विषय का ज्ञान और उस पर पकड़ दो अलग-अलग बातें हैं, विषय का ज्ञान होना ही पर्याप्त नहीं

है, आपकी उस पर पकड़ भी होनी चाहिए। जितना आप उसे समझेंगे, उतना ही आत्मविश्वास से आप समझा पाएंगे, बोल पाएंगे। सबसे पहले श्रोताओं से कनेक्ट होना बहुत जरूरी है, उसके लिए प्रभावी वाक्यों, शब्दों का चयन जरूरी है, उसके लिए अच्छे से तैयारी करें, शुरूआत में ही श्रोताओं से अगर आप कनेक्ट हो जाते हैं, तो वो आपकी हर बात को सीरियसली लेते हैं। वक्ताओं के लिए स्पीकिंग की ए, बी, सी, डी, ई जरूर याद रखनी चाहिए। ए फॉर एक्शन और एरिया यानी आप जिस सब्जेक्ट एरिया के बारे में आप बोलने आए हैं, आपके पास एक्शन प्लान है कि नहीं, जानकारी है कि नहीं, उस एरिया की समस्या और उसका समाधान है कि नहीं। दूसरा बी यानी बोल्डनेस, ये आपके कॉन्फीडेंस का पैमाना है, मंच पर बोलते वक्त आत्मविश्वास से लबालब होने चाहिए। तीसरा सी यानी क्रिएटिव, क्रिएटिवटी बहुत जरूरी है, कुछ जुमले, कुछ शेर, कुछ कविताएँ, कुछ जोक, कुछ प्रेरणा देने वाले वाकए आपके दिमाग की मैमोरी में हमेशा होने चाहिए और आपकी क्रिएटिवटी इसमें है कि आप मौके की नजाकत को देख कर फौरन मौके पर चौका मार सकें। चौथा है डी यानी डाटा, आपको अपने विषय के कुछ इंटरेस्टिंग डाटा जरूर तैयार करके बोलने जाना चाहिए, डाटा या आंकड़े देने से आपकी बातों में वजन आता। पाँचवाँ शब्द है ई, यानी एनर्जी, जब आप बोल रहे हों तो आपके आसपास मंच पर, श्रोताओं के बीच, आयोजकों के बीच एनर्जी लेवल हाई होना चाहिए। अच्छे वक्ता वो होते हैं जो मंच पर आते ही सबसे पहले पूरे ईवेंट की एनर्जी बढ़ा देते हैं, स्लोगंस, गीत या चुटीले वाक्यों से ऐसा किया जा सकता है। हर फील्ड के अच्छे वक्ताओं के वीडियोज यूट्यूब में देखकर आसानी से इसे किया जा सकता है। जब आप मंच पर हों तो यह विश्वास होना जरूरी है कि ये आपका मंच है, आपकी सत्ता है और इस पर आपकी पूरी पकड़ जरूरी है क्योंकि आप अपने अंदर यह महसूस नहीं करेंगे तो आपकी अपनी बात पर भी पकड़ नहीं रहेगी। नम्र

रहिए लेकिन दब्बू नहीं। आंकड़ों और बातों में सच्चाई होनी चाहिए, और विचारों को पूरी मजबूती से रखिए। एक और बड़ी बात है लय और शैली। वक्ता यदि अपने ज्ञान का प्रदर्शन एक सुर में करता रहे तो शायद आधे से ज्यादा श्रोता सो जाएँगे। इसलिए माहौल बोरिंग ना हो, इसलिए इससे बचना जरूरी है। अपनी बातों में लय, रस और एक दिलचस्प शैली डेवलप करना बहुत जरूरी है। बस अपनी बात को फील करिए और उसी भावनात्मक अंदाज में पब्लिक के सामने रख दीजिए, देखिएगा श्रोता कैसे बहता चलेगा आपके साथ। बोलने से पहले ये भी ध्यान में रखना जरूरी है कि सुनने वाले कौन हैं, मेजोरिटी किसकी है। जाहिए है बच्चे सामने बैठे हैं, तो आपको उनके मूड को ध्यान में रखना होगा, महिलाएँ हैं तो उनसे जुड़ी बातों को अपने शब्दों में पिरोना होगा। कॉरपोरेट्स हैं तो उनकी डेली लाइफ से जुड़ी बातों, किस्सों को लेना होगा, युवा किसी और तरह के मूड में रहता है और गाँव देहात के लोग अलग तरह की बातें सुनना चाहते हैं और सबसे बड़ी बात है प्रैक्टिस, जब मौका मिले, जहाँ मौका मिले, स्कूल की स्टेज पर, मोहल्ले की मीटिंग में, घर के फंक्शन में जिस मुद्दे पर मौका मिले, कुछ नाकुछ जरूर बोलिए। धीरे-धीरे आपकी झिझक और डर मिटने लगेगा। स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि आप जिससे सबसे ज्यादा डरते हैं, उसी पर सबसे पहले अटैक करिए, यानी बोलना शुरू करिए। वैसे आजकल तो शुरुआत मोबाइल कैमरे के साथ भी की जा सकती है, तैयारी करिए, अपना मोबाइल ठीक ऊँचाई पर सेट करिए, वीडियो कैमरा ऑन कर दीजिए और कर दीजिए शुरुआत अच्छा वक्ता बनने की। फिर तैयारी करिए, फिर बोलिए, फिर खुद तुलना करिए या खास दोस्त से करवाइए कि पहले से बेहतर हुआ कि नहीं। खुद से ही कम्पटीशन करिए, सच मानिए धीरे-धीरे आप जानेंगे कि ये तो बहुत ही आसान है।

अनुशासन

अनुशासन सफलता की कुंजी है-यह किसी ने सही कहा है। अनुशासन मनुष्य के विकास के लिए बहुत आवश्यक है। यदि मनुष्य अनुशासन में जीवन-यापन करता है, तो वह स्वयं के लिए सुखद और उज्ज्वल भविष्य की राह निर्धारित करता है। मनुष्य द्वारा नियमों में रहकर नियमित रूप से अपने कार्य को करना अनुशासन कहा जाता है। यदि किसी के अंदर अनुशासनहीनता होती है तो वह स्वयं के लिए कठिनाईयों की खाई खोद डालता है। यदि दृष्टि डाली जाए तो समाज में चारों तरफ अनुशासनहीनता दिखाई देती है। यही कारण है कि देश की प्रगति और विकास सही प्रकार से हो नहीं पा रहा है। यदि अनुशासन नहीं होगा तो समाज की दशा बिगड़ेगी और यदि समाज की दशा बिगड़ेगी तो देश कैसे उससे अछुता रहेगा। अनुशासन चंचल मन को स्थिर करता है। यह स्थिरता उन्हें जीवन के सघर्ष में दृढतापूर्वक आगे बढ़ने में सहायक होती है। यह सब अनुशासन के कारण ही संभव हो पाता है।

समय प्रबंधन

हमारे पास वास्तव में उतना ही समय है जितना की किसी भी सफल व्यक्ति के पास। समय, सफलता की कुंजी है। समय का चक्र अपनी गति से चल रहा है या यूँ कहें कि भाग रहा है। अक्सर इधर-उधर कहीं न कहीं, किसी न किसी से ये सुनने को मिलता है कि क्या करें समय ही नही मिलता। वास्तव में हम निरंतर गतिमान समय के साथ कदम से कदम मिला कर चल ही नही पाते और पिछड़ जाते हैं। समय जैसी मूल्यवान संपदा का भंडार होते हुए भी हम हमेशा उसकी कमी का रोना रोते रहते हैं क्योंकि हम इस अमूल्य समय को बिना सोचे समझे खर्च कर देते हैं। इसीलिए कहते है की जो समय की कद्र करता है, समय उसी की कद्र करता है। राजनीति में भी व्यस्तता

जितनी अधिक उतना समय का प्रबंधन जरूरी हो जाता है।

I. सबसे महत्त्वपूर्ण काम सबसे पहले

प्रति दिन 2 अथवा 3 कार्यो की सूचि बनायें जो आपके लिए महत्त्वपूर्ण और कठिन है और इन्हें ही सबसे पहले करे।

II. नहीं कहना सीखें

यह जान लें कि आप अपनी क्षमता से ज्यादा काम नहीं कर सकते और उससे ज्यादा काम मत लें। अगर बीच में कोई काम आता है जिससे आपका चल रहा काम बाधित हो रहा हो तो न कहें या उसके लिए कोई अन्य समय आवंटित करें।

III. 7-8 घंटे सोये

कुछ लोग सोचते है की कम सोना ही सफल जिंदगी की निशानी है लेकिन आप थके हुए शरीर, दिमाग से ज्यादा काम नहीं कर सकते। अगर आप ऐसा करते भी है तो सबसे पहले आपकी काम करने पर असर पड़ता है। इसका मतलब हुआ की आपका स्वास्थ्य बिगड़ना तय है।

IV. अपने वर्तमान कार्य पर पूरा करे

अपना ध्यान भंग करने वाले सभी कामों को ना करे जैसे कि काम करते हुए टेलिवीजन, मोबाईल का इस्तेमाल, इत्यादि अपना सारा ध्यान वर्तमान कार्यों पर दें।

V. प्रतिदिन की योजना बनाएँ

एक दैनिक योजना बनायें। यह योजना आप रात में सोने से पहले या फिर सुबह में बना लें। इससे यह होगा कि कल पूरे दिन आप क्या करने वाले हैं इसका पता चल जायेगा। अब आप अपने योजना के मुताबिक अपने काम को करते रहेंगे।

VI. समय सीमा निर्धारित करे

अपने काम को कब समाप्त करना चाहते हैं उसका एक समय सीमा अंकित कर लें अब अपने आप को इस तरह सक्रिय करें कि आपका काम समय पर पूरा हो जाये।

VII. अनुपयोगी कार्यो से बचे

आपका समय जिस भी काम करने से नष्ट होता है या इससे आप अपने काम से दूर होते जाते हैं समय की बरबादी कहलाते हैं। जैसे टीवी, सोशल मिडिया, सेल्फी जैसे कामों पर ज्यादा समय बिताना इनसे बचें।

VIII. समय का ध्यान

हमेशा वक्त का ध्यान रखें। अपने पास एक घड़ी हमेशा रखें। कभी-कभी काम की व्यस्तता में समय का अहसास नहीं रहता। अत: अच्छे समय प्रबंधक अपने पास एक घड़ी जरूर रखते हैं।

IX. समय निर्धारण

प्रत्येक कार्य के लिए एक समय निर्धारित करें। यह स्पष्ट रखें कि पहला काम 12 बजे तक दूसरा काम 2 बजे तक और तीसरा काम 6 बजे तक कर लेना है। इससे आपका काम न सिर्फ समय पर होता है बल्कि एक काम का समय दूसरे काम में नहीं देना पड़ता है।

X. डेलिगेशन

अपना काम अपने सहयोगियों पर सौंपे। नए नेतृत्त्व के विकास के लिए यह आवश्यक है।

मीडिया प्रबंधन

मीडिया राजनीति में मत निर्धारण करने वाला प्रभावी औज़ार है। समाचार पत्र, टीवी चैनल, सोशल मीडिया इन सभी विधाओं को हमारे कार्य में असरकारी तरीके से प्रयोग करने के लिए मीडिया प्रबंधन एक

बडा विषय है। प्रेस विज्ञप्ति तैयार करना, समय सीमा में समाचार पत्रों तक पहुँचाना, संवाददाता सम्मेलन का आयोजन, संपादकों से संवाद, प्रकाशित सामग्री पत्रकारों तक पहुँचाना, टीवी की चर्चा में शामिल होना, असरकारी ढंग से अपना पक्ष रखना, सोशल मीडिया पर विश्वास अर्जित करते हुए अपने विचार रखना ये सारी बाते आवश्यक हैं। इसके लिए मीडिया सेल बनाकर एक टीम को तैयार करना महत्त्वपूर्ण है। महिलाओं के बारें में अनेक कानून है, इनकी जानकारी रखना, समाज में महिलाओं को इन कानूनी जानकारी दे कर उसका उपयोग करने का तरीका बताना, महिला आयोग जैसी व्यवस्था का ज्ञान देना, राईट टू इन्फॉरमेशन का उपयोग कर, योजना क्रियान्वयन की जानकारी रखकर परिवर्तन की गति बढ़ाने हेतु सूचना हासिल करने का तरीका महिला कार्यकर्ता को बताना प्रशिक्षण देना आवश्यक है। ❍

7. महिला बूथ रचना और चुनाव प्रबंधन

चुनाव के समय सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण विषय है, अधिक से अधिक मतदाता मतदान करने हेतु बूथ पर आये। हमें मतदाता को मतदान करने के लिए प्रेरित करना चाहिये। अतः मतदाता को प्रेरित कर मतदान केंद्र (बूथ) पर लाने हेतु की गयी अति महत्त्वूपर्ण कार्य रचना अर्थात् ''बूथ रचना''।

''बूथ रचना'' यह चुनाव प्रबंधन के अंतर्गत आने वाली, समाज के विभिन्न वर्गों के मतदाताओं तक सीधे पहुँचने और मतदाता से सर्वाधिक निकट संबंध रखने वाली रचना है।

यह रचना जिस भी वार्ड में जिस पार्टी की सबसे सशक्त होगी, उस पार्टी के चुनाव जीतने की सर्वाधिक संभावना रहेगी। जिस प्रकार मतदान का अंतिम सिरा मतदाता है उसी प्रकार चुनाव – चुनाव व्यवस्था का अंतिम सिरा है मतदान केंद्र (बूथ)।

चुनाव में सफलता प्राप्त करने का एक मूलमंत्र बूथ व्यवस्था की संकल्पना है। यह चुनाव प्रबंधन में सामान्य परन्तु महत्त्वपूर्ण आयाम है।

चुनाव और बूथ रचना

ऐसा अनुभव हुआ है कि भारतीय जनता पार्टी का कार्य करते समय हर कार्यकर्ता की कार्यशैली, व्यक्तित्व, स्वभाव, आचार, विचार आदि भिन्न-भिन्न होता है।

राष्ट्र निर्माण के उद्देश्य के लिए, सेवा के लिए विचारधारा के लिए, पक्ष की सत्ता एक महत्त्वूपर्ण साधन है अतः एक राजनैतिक दल के लिए सत्ता जीतना अत्यावश्यक है। हमारी पार्टी, ''पार्टी विथ डिफ्रेंस'' अर्थात् हम अन्य दलों से अलग है। हम समाज के अंतिम घटक तक पहुँचने वाली पार्टी है। एकात्म मानवतावाद का सिद्धांत देने वाले परम

पूजनीय स्व0 श्री पं0 दीनदयाल उपाध्याय जी ने नर को नारायण बनाने हेतु, नारायण रूपी समाज के अंतिम घटक को केंद्र मानकर उन्हें विकास की दिशा, शिक्षा दी। उच्च ध्येय हेतु, भारतवर्ष को एक संघ देश रखने हेतु परम पूजनीय स्व0 श्री श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी द्वारा कश्मीर में स्वयं के प्राण संगठन, संरचना और संघर्ष इन सूत्रों पर भारतीय जनता पार्टी का कार्य अविरत चालू है।

यह कार्य करते समय संगठन के विस्तार हेतु जिला, तालुका, मंडल की रचना कर, गाँव-गाँव तक पार्टी का कार्य पहुँचाने का लक्ष्य लिये अनेकानेक कार्यकर्ता, पार्टी पदाधिकारी-गण, जन तक पार्टी का कार्य पहुँचाने का लक्ष्य लिए अनेकोनेक कार्यकर्ता, पार्टी पदाधिकारी गण, जन प्रतिनिधि प्रयासरत रहे और हैं। भाजपा ने अपना विस्तार और कार्य बढ़ाने के लिए विभिन्न अभियान समय-समय पर चलायें, जैसे कि

1) सदस्यता अभियान

2) महा-सम्पर्क अभियान

3) विस्तारक अभियान

4) गाँव चलो अभियान

5) घर-घर चलो अभियान

इस प्रकार एक के बाद एक अभियानों की घोषणा पश्चात् उसे धरातल पर प्रत्यक्ष कार्यपालित करने हेतु कार्यकर्ताओं द्वारा विभिन्न स्थानों पर अभियान चलाकर इन्हें सफल बनाया है।

नगरनिगमों, नगरपालिओं का चुनाव विभिन्न प्रकार के मुद्दों तथा तरीकों से लड़ा जाता है। जैसे की पार्टी, गठबंधन, अलाइंस, स्थानीय विकास के मुद्दे। इसी तरह विधानसभा और लोकसभा के चुनाव भी पार्टी की छवि और चिह्न आधारित होते हैं इसलिए पार्टी का नाम, उम्मीदवार का नाम, चिह्न, ईवीएम में बटन नंबर, पार्टी का संकल्प पत्र,

प्रचार पत्रक इत्यादि गाँव-गाँव तक पहुँचाने का कार्य अति महत्त्वपूर्ण है और यह हो भी रहा है। पर हमारा कार्य यहीं तक सीमित नहीं है बल्कि समाज के अंतिम घटक तक तथा समाज के प्रत्येक वर्ग तक भाजपा के विचारों को पहुँचाना, अधिक से अधिक बहनों, भाइयों, युवाओं, विभिन्न क्षेत्रों तथा स्तरों पर नौकरी करते हुए लोगों, अधिकारियों, व्यापारियों, किसानों, खेत श्रमिकों, आदिवासियों, दलितों अल्पसंख्यकों तक पार्टी के विचार, पार्टी के विभिन्न कार्य, अभियान हमें स्वयं संपर्क कर पहुँचाना आवश्यक है।

वर्तमान में चुनाव देश में सतत वर्ष-दो वर्ष में कहीं न कहीं होते ही रहते हैं, अतः चुनाव लड़ना, लड़वाना एक नियमित बात है, परन्तु इसकी पद्धति और तरीकों में समयानुसार परिवर्तन होता रहता है और आगे भी होता रहेगा और इस दृष्टिकोण अनुसार नवीन संकल्पनाएँ और संरचनाएँ आती रहेंगी।

चुनाव प्रबंधन में अनेक विषय आते है, उम्मीदवार, उम्मीदवार का प्रवास, उम्मीदवार की छोटी बैठकें, पद यात्रा, बाइक रैली, सार्वजनिक भाषण, कार्यालय चुनाव खर्च का विवरण, अनुमतियाँ, प्रचार के लिए बैनर, पोस्टर, बिल्ले, झंडे, नेताओं तथा स्टार प्रचारकों की सभा, आर्थिक नियोजन, संयोजन, व्यवस्था, प्रचार, मतदाता सूची, चुनाव प्रतिनिधि, पोलिंग एजेंट, काउंटिंग एजेंट, बूथ एजेंट, बूथ के बाहर पार्टी का डेस्क, कार्यकर्ताओं हेतु चुनाव दिवस में भोजन व्यवस्था/टिफिन पहुँचाना, ऐसी अनेकानेक प्रकार की रचना तथा व्यवस्था हम करते है परन्तु अंततः चुनाव जीतने के सिवाय अन्य कोई विकल्प नहीं होना चाहिये।

कई लोगों के अनुसार चुनाव धन से जीता जा सकता है, कुछ के अनुसार चुनाव उम्मीदवार के कारण जीता जा सकता है और बहुतों के अनुसार जातिगत गणित बैठाकर मतों का विभाजन अपने पक्ष में कराकर

विरोधियों को चुनाव में हराया जा सकता है। परन्तु असल में पार्टी के कारण तथा कार्यकर्ताओं के कारण चुनाव जीते जा सकते है, इस पर सभी एकमत ही होंगे, परन्तु अंततः चुनाव जीताने वाली सबसे महत्त्वपूर्ण कड़ी केवल मतदाता है और इसमें किसी प्रकार का कोई भी दूसरा मत है ही नहीं ऐसी सभी बातों पर विचार करके शीर्ष नेतृत्व द्वारा केवल बातों में ही नहीं अपितु इसे ग्राउंड पर अमल में लाने का सतत प्रयास, मार्गदर्शन और तरीको का ज्ञान समय पर दिया जाता रहा है।

हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष द्वारा बूथ रचना कर, भाजपा का कार्य समाज के अंतिम घटक तक ले जाने का निर्देशन है। सामान्य रूप चुनाव जीतने के लिये मतदाता सूचि का अध्ययन जरूरी है। जो इस मतदाता सूचि का अच्छे से अध्ययन करते है उन्हें चुनाव सरल और आसान लगते है। परन्तु जो लोग ऐसा सोचते है कि लहर चल रही है और लहर में हम जीत जायेंगे, उनकी अधिकांश समय अपेक्षाएँ भंग हो जाती है। इसलिए चुनाव जीतने के लिए ''चुनाव प्रबंधन तथा प्रभावी बूथ यंत्रणा'' और ''बूथ रचना'' की आवश्यकता है।

जिस तरह मतदान का अंतिम सिरा मतदाता है उसी प्रकार चुनाव यंत्रणा का अंतिम सिरा मतदान केंद्र/बूथ है।

गाँवों की ग्राम पंचायत, शहरों की नगर निगम/नगरपालिका, उनके वार्ड, सभी में एक समान सूत्र है जो कि है बूथ, इस बूथ की रचना, इस बूथ का अध्ययन अर्थात् बूथ की मतदाता सूची का विस्तृत रूप से अध्ययन करके मतदाताओं के साथ प्रत्यक्ष संपर्क करते है तो चुनाव जीतना सरल तथा आसान हो जाता है, इस हेतु बूथ यंत्रणा और बूथ रचना के साथ बूथ समिति सशक्त और काम करने वाली हो यह भी आवश्यक है।

यदि हम माने की सामान्य तौर पर हर बूथ पर लगभग 1000

मतदाता होते हैं, तो इस अनुसार निम्नलिखित विभिन्न वर्गीकरण/विश्लेषण किये जा सकते हैं।

कुल परिवारों की संख्या/घरों की संख्या

1) कुल पुरूष
2) कुल महिला
3) कुल युवा
4) कुल 18 वर्ष आयु पूर्ण किये नए मतदाता
5) सुशिक्षित बेरोजगार
6) व्यवसायी
7) नौकरी करने वाले
8) बड़े किसान
9) छोटे और सीमांत किसान
10) खेत मजदूर
11) श्रमिक
12) डॉक्टर/वकील/प्रोफेसर/शिक्षक
13) गाँव के बढ़ई/लोहार/नाई (व्यापार अनुसार विभाजन)
14) अक्षम/अपंग
15) विभिन्न वर्गों पर आधारित

बूथ में आने वाले क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के सहकारी संस्थान, उनके प्रतिनिधि, विभिन्न गैर सरकारी संस्थाएँ, धार्मिक संस्थान, मंदिर, मस्जिद, चर्च ऐसे विभिन्न प्रकार के वर्गीकरण द्वारा मतदाता तक पहुँचा जा सकता है।

मतदाता को प्रभावित करने वाले प्रभावशाली लोग कौन हैं? अन्य राजनीतिक दलों के प्रमुख कौन हैं? समाज के किस-किस घटक तक हम पहुँच चुके हैं? ऐसे सभी प्रकार के मुद्दों और जानकारियों के साथ बूथ के कार्यकर्ताओं को अध्ययन करना चाहिये और वोटो का गणित समझना चाहिये। मतदाता सूची में कितने मतदाता मृत हो गए हैं इसका भी अध्ययन होना चाहिये, इससे फर्जी मतदान को रोकने में मदद मिलती है। इसके लिए यदि हम पार्टी में काम करने की योजना, जिम्मेदारी, अध्ययन व्यवस्थित ढंग से करते हैं और मतदाता तक पहुँचते हैं और मतदाता को वोट देने के लिए प्रेरित करते है तो मतदान का प्रतिशत निश्चित रूप से बढ़ जाएगा।

चुनाव से पहले बूथ तंत्र, इस तरह सरकार के विषय में, जन प्रतिनिधियों के विषय में, पार्टी पदाधिकारियों के विषय में लोगों का मत क्या है यह जान सकते है। कभी-कभी सरकार के प्रति अनुकूल अभिप्राय होते हुए भी पर जन प्रतिनिधि, पदाधिकारी आदि के बारे में प्रतिकूल अभिप्राय होने से चुनाव हार जाने का भय बना रहता है। इस प्रकार के विभिन्न अध्ययन करने के लिए प्रभावी बूथ रचना करना अनिवार्य है। उदाहरणार्थ कुछ रचनायें निम्न प्रकार है।

1) शक्ति केन्द्र (एक शक्ति केन्द्र में 5-6 बूथ हो सकते है।)

2) बूथ

3) कुल मतदाता

4) कुल परिवारों की संख्या

5) बूथ प्रमुख

6) बूथ सह-प्रमुख

7) बूथ समिति

8) 10 कार्यकर्ता (कम से कम 3 महिला और युवा अनिवार्य)

9) केवल महिलाओं की भी बूथ कमेटी हो सकती है।

10) पन्ना प्रमुख

11) मतदाता के साथ पहचान

12) कर्मचारी/मतदाता/परिवार के कुल व्यक्तियों का वर्गीकरण

13) पत्रक/प्रचार/मतदाता स्लिप का वितरण

14) मतदाता से सम्बन्ध

15) चुनाव में कैसे उतरे

बूथ रचना करे, बूथ तंत्र बनाये, बूथ सम्मेलन करें, यदि चुनाव में धन का, जाति का, सत्ता का प्रभाव हो तो इन विपत्तियों से कैसे जीते? ऐसे अनेकानेक प्रश्न मन में आते हैं।

हम जनसंघ/जनता पार्टी के जन्म से चुनाव लड़ने की प्रक्रिया में हैं। वर्तमान में, लोगों में जागरूकता बढ़ी है। अत: तकनीक द्वारा, प्रैक्टिस से, अध्ययन से, जानकारी से चुनाव कैसे जीते जाये इस रचना द्वारा बताने का यह एक प्रयास है। सत्ता का प्रभाव, जातिगत समीकरण, धन का दुरूपयोग आदि के कारण होने वाले बल्क वोटिंग के विरूद्ध चुनाव जीते जाये, ऐसे विभिन्न समस्याओं को हल करने हेतु यह हमारा प्रयास है और ऐसी सभी नकारात्मक शक्तियों को हराने का मूलमंत्र बूथ रचना ही है।

यदि हम ऐसी बूथ रचना के साथ जागृत रहकर, जानकारी का सही अध्ययन करके चुनाव व्यवस्था का आयोजन करे तो हमारे कार्यकर्ताओं का आत्मविश्वास बढ़ेगा और ऐसे अनेक उदाहरण है जहाँ कार्यकर्ताओं द्वारा असंभव सीटे भी जीत के बताई गयी है।

अंतत: बूथ कार्यकर्ता सक्षम और आत्मविश्वास से भरा होगा तो सभी विपरीत प्रभावों को हराकर, संगठन संरचना के जोर पर, समयानुसार संघर्ष से, कोई भी बूथ जीता जा सकता है। पूर्व से चली आ रही

परंपरागत पद्धति को नवीन तंत्रज्ञान, जानकारी और अध्ययन से अमल में लाकर चुनाव में उतरना अर्थात् चुनाव प्रबंधन तथा बूथ रचना।

बूथ रचना कारगर और यशस्वी हो इस हेतु अधययन और परिश्रम करना चाहिए।

मतदाता का नाम मतदाता सूची में पंजीयन कराने से लेकर नयी मतदाता सूची और पूरक सूची जारी होने तक जो लोग स्थानानांतरित या मृत हो गए है उनका नाम निकालना यह प्राथमिक आवश्यकता है।

दूसरा, तैयारी की गयी और जारी की गयी मतदाता सूची का अध्ययन करके उसका विस्तृत विश्लेषण हर स्तर पर करना आवश्यक है। सक्षम, आर्थिक रूप से स्थिर, गरीबों की ओर झुकाव रखने वाले आदि का सामाजिक स्तर पर विश्लेषण करना आवश्यक है और इसके अनुसार इनमें से कितने लोग हमारे निश्चित मतदाता है। कितने निश्चित विरोधी है और कितने किसी भी पार्टी को वोट दे सकते हैं इसका योग्य अध्ययन करके बूथ जीतने की रणनीति बनाना चाहिए।

फर्जी मतदान रोकने के लिए एक पुरानी मतदाता सूची लें, पुराने मतदाताओं की कुल संख्या सभी कार्यकर्ताओं के साथ चर्चा करें, पेज प्रमुख और पेज की टीम के साथ बात करके अध्ययन करें।

कितने स्थानांतरित हुए हैं, कितने विदेश गये और कितने मृत हो गए उनकी सूची बनाएँ क्योंकि इन मतदाताओं का नाम निकालना आवश्यक है। हमारे मतदान एजेंट और बूथ एजेंट को नई प्रकाशित सूची देकर रखे और अगर किसी स्थानांतरित या मृत का नाम है, तो उसकी जानकारी होनी चाहिए। फर्जी मतदान रोकना भी चुनाव जीतने का एक तरीका है।

आज (2018) में भारत में 100 करोड़ से ऊपर मोबाइल धारक हैं, 42 करोड़ से अधिक लोगों के पास मोबाइल इंटरनेट है, फेसबुक,

व्हाट्सप, ट्विटर घर-घर लोगों के हाथों में पहुँच गए हैं। आज के समय में सूचनाओं के आदान-प्रदान में सोशल मीडिया का बहुत महत्त्व है। एक क्लिक के ऊपर बहुत गति से कोई सूचना, संदेश बहुत कम खर्च में सोशल मीडिया के माध्यम से लाखों करोड़ों लोगो तक पहुँच जाता है।

सभी बूथ कार्यकर्ताओं का फेसबुक और ट्विटर प्रोफाइल होना चाहिए। इस पर हमारी पार्टी विषयी, उम्मीदवार विषयी, अपनी सरकार विषयी सकारात्मक बातों को बढ़ावा देना जारी रखा जाना चाहिए।

व्हाट्सव के ग्रुप्स, ब्रॉडकास्ट ग्रुप होने चाहिये जिसमें एक क्लिक पर आप अपने प्रचार को हजारों लोगों तक पहुँचा सकते हैं।

इस पर विपक्ष के आरोपों तथा हमलों का जवाब देकर, सकारात्मक वातावरण का निर्माण करना चाहिए।

कार्यकर्ता पार्टी का चेहरा (फेस) है। जैसा कार्यकर्ता का आचरण और व्यवहार वैसी पार्टी की छवि, कार्यकर्ता को इसका ध्यान रखकर अपना आचरण सोशल मीडिया तथा अन्य स्थानों पर करना चाहिये। सकारात्मकता तथा वास्तविकता को ध्यान में रखकर सोशल मीडिया पर जोरदार प्रचार करना चाहिए।

आज चुनाव में सोशल मीडिया पर प्रचार अति महत्त्वपूर्ण है और सभी कार्यकर्ताओं द्वारा इसका ज्ञान और इसकी सहायता निश्चित लेनी चाहिए।

बूथ रचना

चुनाव यह एक प्रकार का युद्ध है और चुनाव जितने का मंत्र 50 प्रतिशत योजना और 50 प्रतिशत प्रत्यक्ष युद्धभूमि पर निष्पादन के ऊपर निर्भर है। अतः यदि चुनाव जीतने हो तो युद्ध के पूर्व आयोजन और तैयारी आवश्यक है। चुनाव की पूर्व तैयारी के रूप में अच्छी प्लानिंग

अत्यंत जरूरी है। क्योंकि जीत और हाथ बूथ प्लानिंग पर निर्भर है।

गुजरात, उत्तर प्रदेश आदि राज्यों के चुनाव में हमनें अनुभव किया है। आदरणीय नरेन्द्र मोदी जी के तथा अमित शाह जी के नेतृत्व में हमने कई विजय प्राप्त की है और इनमें बूथ प्रबंधन तथा बूथ समिति का अहम् योगदान रहा है। इसलिए बूथ समिति की रचना अत्यंत महत्त्वपूर्ण और गंभीर आयोजन का कार्य है और यह पूर्ण गंभीरता से होना चाहिये।

पूर्व तैयारी चुनाव का मुख्य भाग है और समय पर आदरणीय नरेन्द्र मोदी जी, अमित शाह जी तथा वरिष्ठ पदाधिकारियों द्वारा कई मौंको पर बूथ रचना तथा इसका महत्त्व बताया गया है।

बूथ के वाली (अभिभावक)

बूथ के वाली (अभिभावक) अर्थात् बूथ समिति, बूथ प्रमुख, बूथ सदस्य, पन्ना प्रमुख, ये एक ऐसी टीम है जो संगठित रूप से, अध्ययन और परिश्रम से असंभव को भी संभव बना सकती है।

बूथ समिति कैसी होनी चाहिये

बूथ समिति में न्यूनतम 5 सक्रिय कार्यकर्ता, 5 प्राथमिक कार्यकर्ता, उसमें 3 महिला कार्यकर्ता, 2 युवा कार्यकर्ता होना चाहिये। मतदाता सूची के लिए एक प्रमुख नियुक्त होना चाहिए, आमतौर पर 60 पेजों की मतदाता सूची के लिए एक प्रमुख नियुक्त होना चाहिए। हर पृष्ठ का एक पृष्ठ प्रमुख होना चाहिए, बूथ समिति के सभी सदस्यों के पास सोशल मीडिया का ज्ञान होना चाहिए और यदि ना हो तो उन्हें सीखाना चाहिए। एक सोशल मीडिया प्रमुख की नियुक्ति होनी चाहिए। बूथ सह-प्रमुख और बूथ मंत्री की भी नियुक्ति होनी चाहिए। बूथ प्रमुख और बूथ मंत्री द्वारा काम का अच्छी तरह से विभाजन होना चाहिए। बैठक लेकर, इन बूथ कार्यकर्ताओं को उनकी जवाबदारियाँ देनी चाहिए। किये हुए कार्यों की रिपोर्ट नियमित लेनी चाहिए और उनका प्रशिक्षण करना चाहिए।

बूथ समिति के कार्य

1) बूथ समिति और सदस्यों की सूची तैयार करना।
2) मतदान केन्द्र की जानकारी लेना।
3) मतदाता सूची का अध्ययन करना और पृष्ठ प्रमुखों को सूची प्रदान करना।
4) मतदाता परिचय पत्र सम्बन्धित कार्य।
5) तालिका चुनाव कार्यालय के अधिकारियों को मिलना।
6) मतदाता के परिवार के सभी सदस्यों को संपर्क करना, संपर्क करते समय नीचे दी गयी बातों का ध्यान रखना।
7) पार्टी का पत्रक देना, विकास के कामों की रिपोर्ट देना, सकारात्मक बातें करना।
8) परिवार के प्रत्येक सदस्य के लिए हमारी पार्टी क्या मदद कर सकते है इसकी जानकारी देना (उदाहरण के लिए - रोजगार में सहायता, रोगी की सहायता)।
9) हमारी पार्टी के लोक प्रतिनिधियों द्वारा किए गए कामों की रिपोर्टिंग, और संस्था/पार्टी से किए गए सामाजिक और सेवा कार्यों की रिपोर्ट देना।
10) वातावरण का निर्माण-झंडे, पोस्टर, बैनर, होर्डिंग, स्टीकर लगाना और चुनाव का वातावरण बनाना।
11) सोशल मीडिया फेसबुक/ट्विटर/व्हाटस्अप का उपयोग करके अपनी पार्टी, उम्मीदवार, सरकार की कार्यप्रणाली लोगों तक लगातार पहुँचाना और विपक्ष के आरोपों का सोशल मीडिया पर जोरदार जवाब देना।
12) हमारी पार्टी के बिल्ले, खेस, चिह्न से प्रचार करना।

13) गणमान्य वोटरों और प्रभावशाली लोगों के साथ लगातार संपर्क में रहना।

14) मतदान स्लीपों का वितरण घर पर जाकर प्रत्यक्ष मतदाता को करना।

15) नव मतदाता सम्मेलन, महिला कार्यक्रम, चाय पर चर्चा, सार्वजनिक सभा ऐसे कार्यक्रम करना।

16) दूसरी पार्टी का कामकाज और गतिविधियों पर नजर रखना।

17) अन्य संगठनों के साथ संपर्क रखना।

18) ईवीएम मशीन प्रतिरूप का उपयोग करके मतदाता को मार्गदर्शन करना, अपने उम्मीदवार का नाम, क्रम और चिह्न ईवीएम में कहा होगा इसकी जानकारी देना।

19) मतदाना के दिन पोलिंग एजेंट द्वारा ईवीएम मशीन की जानकारी लेना, मॉक पोल करवा कर देखना, मॉक पोल को मिटवाना। सरकारी चुनाव अधिकारी से संपर्क करना।

20) बूथ के बाहर के टेबल पर मतदाता सूची रखना, टिक करना और वाहन की व्यवस्था करना।

21) लूज टॉकिंग नहीं करना। नकारात्मक टिप्पणी नहीं करना। कार्यकर्ताओं के उत्साह और मनोबल को ऊँचा रखना। कार्यकर्ताओं के छोटे से छोटे प्रयास और उपलब्धि की भी प्रशंसा करना।

22) देश की आधी मतदाता महिलाएँ हैं। इसलिए चुनाव में उनका उपयोग अधिकता से करना चाहिए क्योंकि प्रचार-प्रसार के समय बहनें, घर के अन्दर जा कर मतदाता बहनों से मिलकर उनको प्रभावित करती हैं।

23) सभी कार्यकर्ताओं के पास एक छोटी डायरी और पेन अवश्य

होना चाहिए क्योंकि वे जहाँ जिस क्षेत्र का दौरा करें, जिनसे सम्पर्क करें उन बातों को डायरी में नोट करें तथा रोज जब दौरा करके लौटें तो कार्यालय में रिपोर्ट करना आवश्यक होना चाहिए।

24) चुनाव का कार्यालय मेन रोड पर खोलना चाहिए तथा उस कार्यालय में टेलीफोन, फैक्स मशीन, कार्यालय साफ-सफाई के लिए कर्मचारी, प्रचार-प्रसार साहित्य, वरिष्ठ कार्यकर्ता, कार्यालय में हमेशा उपस्थित रहें, इसके लिए कम-से-कम तीन कार्यकर्ताओं की ड्यूटी लगानी चाहिए। कार्यालय में वो कार्यकर्ता बैठे जो क्षेत्र के सभी लोगों को पहचानते हों।

25) चुनाव आयोग प्रत्येक चुनाव में बहुत सख्ती बरतता है, इसलिए चुनाव आयोग द्वारा दिये गये दिशा निर्देशों का, हम लोगों को पालन करना चाहिए।

अन्त में चुनाव की अंतिम लड़ाई बूथ पर ही लड़ी जाती है। वहाँ निर्भीक, परिश्रमी, समर्पित कार्यकर्ताओं की नियुक्ति की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए, उनको वहाँ रखना चाहिए विजय हमारी निश्चित होगी, क्योंकि हम परिश्रम की पराकाष्ठा करेगें।

❍

8. महिला केन्द्रीत राज्य एवम् केन्द्र की योजनायें और महिलाओं की भूमिका

हम बार-बार यह कहते है कि सत्ता में परिवर्तन इतना ही हमारा लक्ष्य नहीं है। राष्ट्र निर्माण एवम् समाज की उन्नति में सत्ता को हम एक प्रभावी साधन के रूप में देखते है। राजनीतिक सत्ता अगर एक साधन है तो उसे असरकारी होने में अहम् भूमिका समाज के विभिन्न तबकों के लिये बनायें गये मोर्चाओं का महत्त्व है। सत्ता में अब परिवर्तन होता है तो सत्तापक्ष के वैचारिक सैद्धान्तिक भूमिका के अनुसार सरकार की भूमिका एवम् दिशा में भी परिवर्तन होता है। विभिन्न सरकारी योजनायें एक जैसी ही लगती है। अलग-अलग सरकारों में विभिन्न वर्गों के लिये योजनायें बनायी जाती है। विभिन्न वैचारिक भूमिका से चलने वाली सरकारें जब अपनी वैचारिक योजनायें बनाती है लेकिन उसको अमल करने वाली प्रशासनिक मंत्रणा एवं कार्यशैली वहीं होती है। प्रशासन का चाल, चरित्र और क्रियान्वयन का तरीका एक समान होता है। इसलिये सरकार बदलने के पश्चात कुछ दिनों के बाद लोगों में यह भावना पनपने लगती है कि सरकार तो बदली है लेकिन हमें हमारी रोजमर्रा की जिंदगी में कोई परिवर्तन महसूस नहीं हो रहा है। इस मोड़ पर हमारे महिला मोर्चा एवम् महिला मोर्चा की कार्यकर्ता की भूमिका शुरू होती है। सरकारी योजना की सूचना गाँव, देहात और झुग्गी झोंपड़ी तक ले जाना अपेक्षित लाभार्थी को जानकर उन्हें योजनाओं का लाभ दिलाना यह अहम् बात है। इसके लिए निम्न कुछ बातें हमें करनी होगी -

1) **योजनाओं को जानना:** सरकार द्वारा बनाई नई योजनाओं की सूचना प्राप्त करना। योजनाओं का अध्ययन करना।

2) **लाभार्थी को पहचानना:** सरकार की योजनाओं का लाभार्थी कौन हो सकता है। जिनकों इन योजनाओं की बहुत जरूरत है। अपने विचार के और राजनीतिक प्रक्रिया में हमारे साथ रहने वाले कार्यकर्ता हित चिंतक वर्ग में कौन लाभार्थी हो सकता है यह जानना जरूरी है। इसके लिये मीडिया, सोशल मीडिया का उपयोग जरूर हो सकता है।

3) **अमल करने वाली प्रशासकीय मंत्री के बारे में जान लेना:** इन सरकारी योजनाओं को जिला प्रशासन, स्थानीय स्वराज संस्था (जिला परिषद, महानगरपालिका, नगर परिषद, नगर पंचायत) कृषि, महिला बाल विकास, समाज कल्याण, आदिवासी, आरोग्य, शिक्षा विभाग जैसे जिस सरकारी मंत्रणा के माध्यम से अमल में लाना आपेक्षित है उस सरकारी मंत्रणा के बारे में जानकारी लेना। अधिकारी एवम् निर्णय जिनके हाथ में है, उनके साथ संवाद करना।

4) उचित लाभार्थी को योजनाओं का लाभ दिलाना।

5) लाभान्वित वर्ग के जीवन में योजना के कारण परिवर्तन होने के पश्चात् यशकथा को मीडिया के माध्यम से लोगों तक ले जाना ज्यादा जरूरी है।

6) मीडियाकर्मियों से अच्छे संबंधों का उपयोग कर उन्हें योजना के लाभार्थियों तक ले जाना।

7) महिला मोर्चा के माध्यम से किये गये विकास के इन कामों का वृत्त निवेदन जानकारी महिला मोर्चा में अपेक्षित स्तर तक लिखित रूप में भेजना।

8) **हितग्राही सम्मेलन करना:** सरकारी योजनाओं का लाभ अनेक लोगों को मिलता है। उनके हितग्राही सम्मेलन करना आवश्यक

होता है इससे हमेशा के लिये यह लोग हमारी सरकार से जुड़े रह सकते है।

लोकतंत्र का मूल ही ''जनता के द्वारा, जनता के लिए, जनता की सरकार'' हैं। चूँकि सब कुछ जनता-जनार्दन है इसलिए सबसे पहले केवल ओर केवल ''जनता'', यूँ भी किसी देश का विकास तभी संभव है जब आम-जन स्वयं के विकास के साथ देश के विकास में भी योगदान दे। इसलिए जनता के हितार्थ योजनाओं का ना केवल निर्माण होना चाहिए अपितु सफलतापूर्वक धरातल तक क्रियान्वयन भी होना चाहिए। इसके लिए केवल सरकार ही नहीं कार्यकर्ताओं को भी पूर्ण निष्ठा और समर्पण से जनता के बीच काम करने की आवश्यकता होती है। केंद्र में भाजपा निति सरकार 2014 से सवा सौ करोड़ भारतीयों को साथ लेकर चलने की सोच, सबका साथ सबका विकास की सोच, लक्ष्य-अन्त्योदय प्रण-अन्त्योदय-पथ-अन्त्योदय विचार के साथ काम कर रही है। देश और जनता सर्वोपरि है इसके लिये भाजपा सरकार और संगठन मनसा-वाचा-कर्मणा तीनों कर्मों को संपूर्ण निष्ठा, ईमानदारी, समर्पण और कर्तव्यता के साथ सरकार और हमारे कार्यकर्ताओं ने अपनी कार्य-शैली में पूर्ण रूपेण सत्यापित किया है। हमारे प्रधानमंत्री भी स्वयं को प्रधान सेवक मानते हैं।

अंतिम पंक्ति के व्यक्ति को भी मुख्यधारा में लाने की भावना के साथ भाजपा सरकार ने लगभग 4 साल में लगभग 150 योजनाएँ बनाई। क्या महिलाएँ, क्या बच्चे, क्या बुजुर्ग, क्या किसान, नौजवान, गरीब, पिछड़े, अनुसूचित जनजाति, अनुसूचित जाति सबको मुख्यधारा में लाने हेतु एवं सब को सुरक्षा सम्मान के साथ जीवन-यापन हेतु कई योजना बनाई है।

कुछ महत्त्वपूर्ण योजनायें...

1. **जनधन : भारत में वित्तीय समावेशन** पर राष्ट्रीय मिशन है

और जिसका उद्देश्य देश भर में सभी परिवारों को बैंकिंग सुविधाएँ मुहैया कराना और हर परिवार का बैंक खाता खोलना है। इस योजना की घोषणा 15 अगस्त 2014 को तथा इसका शुभारंभ 28 अगस्त 2014 को मा. प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने किया। इस परियोजना की औपचारिक शुरुआत से पहले प्रधानमंत्री ने सभी बैंको को ई-मेल भेजा जिसमें उन्होंने 'हर परिवार के लिए बैंक खाता' को एक 'राष्ट्रीय प्राथमिकता' घोषित किया। अब तक 31.38 करोड लाभार्थी है और उनके खाते में अब लगभग 77,600 करोड रूपये बैलेन्स है। इस योजना का सर्वाधिक लाभ महिलाओं को मिला है। आज बडी संख्या में महिलाएँ खाताधारक है।

2. स्वच्छ भारत मिशन : स्वच्छ भारत अभियान भारत सरकार द्वारा आरंभ किया गया राष्ट्रीय स्तर का अभियान है जिसका उद्देश्य गलियों, सड़कों तथा अधोसंरचना को साफ-सुथरा करना है। यह अभियान महात्मा गाँधी के जन्मदिवस 02 अक्टूबर 2014 को आरंभ किया गया। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने देश को गुलामी से मुक्त कराया, परन्तु 'क्लीन इण्डिया' का उनका सपना पूरा नहीं हुआ तथा महात्मा गाँधी ने अपने आसपास के लोगों को स्वच्छता बनाए रखने संबंधी शिक्षा प्रदान कर राष्ट्र को एक उत्कृष्ट संदेश दिया था। स्वच्छ भारत का उद्देश्य व्यक्ति, क्लस्टर और सामुदायिक शौचालयों के निर्माण के माध्यम से खुले में शौच की समस्या को कम करना या समाप्त करना है। स्वच्छ भारत मिशन लैट्रिन उपयोग की निगरानी के जवाबदेह तंत्र को स्थापित करने की भी एक पहल करेगा। सरकार ने 2 अक्टूबर 2019, महात्मा गाँधी के जन्म की 150वीं वर्षगांठ तक ग्रामीण भारत में 1.96 लाख करोड़ रुपये की अनुमानित लागत (यूएस $ 30 बिलियन) के 1.2 करोड़ शौचालयों का निर्माण करके खुले में शौंच मुक्त भारत (ओडीएफ) को हासिल करने का लक्ष्य रखा है। अब तक पूरे देश में

46.36 लाख व्यक्तिगत शौचालयों का निर्माण हुआ है, 3 लाख से उपर सार्वजनिक शौचालयों का निर्माण हुआ है। लगभग दो हजार शहरों को खुले से शौचमुक्त (ओडीएफ) किया है। इसी तरह कूड़े के निस्तारण में लोगों मे जागरूकता व्यापक रूप से आयी है। कूडेदान का उपयोग ना केवल बडा है, अपितु गिली-सुखे कचरे हेतु लोंगो ने निले हारे कूड़ेदानों को भी उपयोग में लाना शुरू कर दिया है। स्वच्छ मिशन की ये कामयाबी की सबसे बड़ी बात ये है, कि भारत वर्ष में ही लोगों को व्यावहारिक रूप से बर्ताव में बदलाव आया है।

3. प्रधानमंत्री शहरी और ग्रामीण आवास योजनाः प्रधानमंत्री आवास योजना भारत सरकार की एक योजना है जिसके माध्यम से नगरों में रहने वाले निर्धन लोगों को उनकी क्रयशक्ति के अनुकूल घर प्रदान किये जाएँगे। सरकार ने 9 राज्यों के 305 नगरों एवं कस्बों को चिह्नित किया है जिनमें ये घर बनाए जाएंगे। प्रधानमंत्री आवास योजना केंद्र सरकार द्वारा संचालित योजना है इस योजना का शुभारंम 25 जून, 2015 को हुआ। इस योजना का उद्देश्य 2022 तक सभी को घर उपलब्ध करना है। इसके लिए सरकार 20 लाख घरों का निर्माण करवाएगी जिनमें से 18 लाख घर झुग्गी-झोपड़ी वाले इलाके में बाकि 2 लाख शहरों के गरीब इलाकों में किया जायेगा। शहरों में 12 लाख रुपए सालाना आमदनी वाले लोगों को 90 वर्ग मीटर तक के घर के लिए नौ लाख रुपए तक का लोन दिया जाएगा, जिस पर चार फीसदी ब्याज सब्सिडी दी जाएगी, जो करीब 2 लाख 35 हजार रुपए होगी। इसी तरह 12 से 18 लाख रुपए आमदनी वाले लोगों को 110 वर्ग मीटर तक के घर के लिए 12 लाख रुपए तक के लोन पर तीन प्रतिशत की सब्सिडी दी जाएगी, जो करीब 2 लाख 30 हजार रुपए होगी। अगर आप नौ लाख रुपए होम लोन 20 साल के लिए लेते हैं तो उस पर आपको चार प्रतिशत की दर से सब्सिडी मिलेगी और उसे ईएमआई में

2062 रुपए कम देने पड़ेंगे। इसी तरह 12 लाख रुपए तक के होम लोन 20 साल के लिए लेने पर तीन फीसदी की सब्सिडी से ईएमआई में 2019 रुपए की कमी आएगी। अगर मौजूदा होम लोन 8.65 प्रतिशत ब्याज की दर से देखें तो चार फीसदी की सब्सिडी मिलने से ईएमआई 2,062 रुपए और तीन प्रतिशत सब्सिडी से 2,019 रुपए कम हो जाएगी।

4. बेटी बचाओ - बेटी पढ़ाओ : बालिकाओं के अस्तित्व, संरक्षण और शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 22 जनवरी, 2015 को पानीपत, हरियाणा में इस कार्यक्रम की शुरूआत की गई थी। इस कार्यक्रम का उद्देश्य लड़कियों के गिरते लिंगानुपात के मुद्दे के प्रति लोगों को जागरूक करना तथा लिंग के आधार पर लड़का और लड़की में होने वाले भेदभाव को रोकने के साथ-साथ प्रत्येक बालिका की सुरक्षा, शिक्षा और समाज में स्वीकृति सुनिश्चित करना है। 'बेटी बचाओ, बेटी पढाओ' योजना का विस्तार देश के सभी 640 जिलों में विस्तार किया जायेगा। इसकी शुरुवात उन जिलों से होगी जहाँ लड़कियों का जन्मदर कम है।

5. प्रधानमन्त्री उज्ज्वला योजना: इस योजना की शुरुआत प्रधानमंत्री मोदी द्वारा 1 मई 2016 को की गई थी। इस योजना के अंतर्गत गरीब महिलाओं को मुफ्त एलपीजी गैस कनेक्शन मिलेंगे जिससे महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा मिलेगा और उनका स्वास्थ्य भी सुरक्षित रहेगा। इस योजना के माध्यम से सरकार ग्रामीण क्षेत्रों में खाना बनाने में इस्तेमाल होने वाले जीवाश्म ईंधन की जगह एलपीजी के उपयोग को बढ़ावा देकर पर्यावरण को स्वच्छ रखने में महिलाओं की भूमिका को बढ़ाना चाहती है। पिछले डेढ़ साल में गरीब महिलाओं में करीब 3 करोड़ 20 लाख गैस सिलिंडर का मुफ्त वितरण हुआ है। प्रदूषणकारी ईंधन के इस्तेमाल से चूल्हे पर एक घंटा खाना पकाना चार सौ सिगरेट

का सेवन करने जितना हानिकारक होता है। इसे देखा जाये तो गैस सिलिंडर की वजह से महिलाओं को इस प्रदूषण से मुक्ति मिलेगी। यह योजना काफी लोकप्रिय हुई है और गरीब महिलाओं के लिए स्वस्थ्य सुरक्षा कवच बनी है। अब आठ करोड घरों में कनेक्शन देने का नया लक्ष्य रखा है।

6. प्रधानमंत्री मुद्रा योजना : प्रधानमंत्री मुद्रा योजना का मुद्रा ऋण देश के गैर कॉर्पोरेट छोटे व्यापारों के वित्त जरूरतों को पूरा करने के लिए भारत सरकार का उपक्रम। इसके पीछे का भाव यह है कि छोटे से व्यवसाय के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करना जो की भारतीय कामकाजी आबादी में बहुमत को रोजगार प्रदान करता है। मुद्रा योजना के तहत ऋण के तीन प्रकार हैं:

- शिशु: 50,000/- रुपये तक के ऋण को कवर करता है।
- किशोर: 50,000/- रुपये के ऊपर और 5 लाख रूपए तक ऋण को कवर करता है।
- तरुण: 5 लाख रूपये से ऊपर और 10 लाख रुपये तक के ऋण को कवर करने के लिए वर्तमान में मुद्रा योजना के तहत ऋण निम्नलिखित द्वारा दिए जा रहे हैं:

  2016-17 इस आर्थिक वर्ष में 1 लाख 80 हजार करोड़ रुपयों का ऋण वितरित किया गया। इसमें से 70 प्रतिशत महिलाओं के लिए था। इसका मतलब यह है के सवा करोड़ रुपये का ऋण महिलाओं को दिया गया। इसमें भी अन्य पिछड़े वर्ग, अदिवासी, दलित तथा मुस्लिम महिलाओं की बड़ी तादाद है। इससे उनके आर्थिक सक्षमीकरण को बड़ी मदद मिल रही है।

7. प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना : प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना भारत के युवाओं में कौशल का विकास करने के लिए

भारत सरकार ने प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना की शुरुआत की थी, जिसके द्वारा ऐसे अवसरों का निर्माण करना है जिससे महिलाओं व युवा अपना पसंदीदा मार्ग चुनकर अपना भविष्य उस मार्ग की सहायता से बना सकें। इसके अंतर्गत सभी ट्रेनिंग प्रोग्राम सेक्टर स्किल काउंसिल यानि एसएससी द्वारा किया जायेगा, जिसके अंतर्गत कौशल प्रशिक्षण की पुरी फीस का वहन सरकार द्वारा किया जाता है। अब तक 33 लाख महिलाओं को प्रशिक्षण दिया गया है।

8. प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व योजना : 9 जून, 2016 को हमारे देश के माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा एक और योजना प्रारंभ की गयी, इस योजना का नाम है प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व योजना, जो उन गर्भवती महिलाओं के लिए हैं, जो अपनी गर्भावस्था में अनेक बीमारियों से ग्रसित हो जाती हैं और समय पर इलाज न मिलने के कारण अथवा स्वास्थ्य सुविधाओं के अभाव में मृत्यु को प्राप्त होती हैं, उनका शिशु मृत पैदा होता है या कमजोर स्वास्थ्य वाला होता है या माता किसी प्रकार से कमजोर रह जाती है। यह योजना इन परेशानियों से बचाने, मुफ्त स्वास्थ्य परीक्षण हेतु कदम उठाये जाने के लिए प्रारंभ की गयी है। इसके अंतर्गत हर माह के नौवें दिन गर्भवती महिला के स्वास्थ्य की जाँच की जाएगी। इस योजना का मुख्य उद्देश्य गर्भवती महिलाओं को स्वस्थ शिशु और स्वस्थ जीवन प्रदान करना है। यह योजना गरीब, असंघटित और रोज कमाकर खाने वाली गर्भवती महिलाओं के पहले संतान के लिए 6000 रूपये का सीधा लाभ (नकद रकम) देने वाली है। यह रकम तीन चरणों में मिलेगी। आने वाले तीन सालों में इस योजना के लिए 12,660 करोड़ रूपया खर्च होगा तथा लगभग 52 लाख गर्भवती महिलाओं को इसका लाभ होगा।

9. मातृत्व लाभ : इस योजना के तहत मैटरनिटी बेनिफिट्स हर कामकाजी महिलाओं का अधिकार है। इसके तहत एक प्रेगनेंट महिला

को 26 सप्ताह तक मैटरनिटी लीव मिल सकती है। इस दौरान महिला के सैलरी से कोई कटौती नहीं की जाती है।

10. महिला सुरक्षा तथा सक्षमीकरण योजना : महिलाओं की सुरक्षा मजबूत करने के साथ उनकी क्षमताओं को विकसित करने के उद्देश्य से केंद्र सरकार ने यह योजना शुरू की है। इसके अलावा देश भर में प्रधानमंत्री महिला शक्ति केंद्र भी शुरू किये जायेंगे। इसके लिए अगले साल साढ़े तीन हजार करोड़ से भी ज्यादा राशि मुहैया कराई जाएगी। इस योजना के बाकी पहलू इस प्रकार है।

i. **प्रधानमंत्री महिला शक्ति केंद्र :** देश के अति पिछडे 115 जिलों के लिए प्रधानमंत्री महिला शक्ति केंद्र (पी.एम.एम.एस.के.) योजना को मंजूरी दे दी गयी है। इन केन्द्रों से ग्रामीण इलाके की महिलाओं को अलग-अलग सरकारी योजनाओं की जानकारी दी जाएगी। प्रशिक्षण, सामाजिक सांझेदारी, एकात्मिक विकास के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं के सक्षमीकरण पर खास ध्यान दिया जायेगा। इस काम के लिए स्थानीय महाविद्यालयों के करीब 3 लाख छात्रों को 'परिवर्तन स्वयंसेवक' के तौर पर नियुक्त किया जायेगा। एनएसएस तथा एनसीसी के छात्रों को भी इसमें शामिल किया जायेगा। इन स्वयंसेवकों के काम का डिजिटल मूल्यांकन किया जायेगा और उन्हें प्रमाणपत्र दिए जायेंगे। यह छात्र 'परिवर्तन दूत' के तौर पर काम करेंगे।

ii. **वन स्टॉप सेंटर:** अत्याचार पीड़ित महिलाओं के लिए 150 से ज्यादा जिलों में 'वन स्टाप सेंटर' (ओएससी) शुरू किया जायेगा। 'एकल खिड़की सेवा' इस संकल्पना पर आधारित इन सेंटर्स से महिलाओं को चिकित्सा, पुलिस मदद, कानूनी मदद, समुपदेशन के साथ-साथ अस्थायी आवास के सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी।

iii. **महिलाओं के लिए हेल्पलाइन :** देश के 28 राज्य तथा केन्द्रशासित

प्रदेशों में 24 घंटे कार्यरत 181 यह हेल्पलाइन मुश्किल के समय महिलाओं के लिए काफी उपयोगी साबित हो रही है। सार्वजनिक जगहों तथा पारिवारिक हिंसा का सामना करने वाली महिलाओं के लिए 24 घंटे कार्यरत यह हेल्पलाईन मुश्किल के समय उपयोगी साबित होगी।

iv. **नौकरीपेशा महिलाओं के लिए हॉस्टल:** शहरों में रहने वाली नौकरीपेशा महिलाओं की समस्या को ध्यान में रखते हुए 190 हॉस्टल बनाने का निर्णय लिया गया है। इनमें 19000 महिलाओं के रहने की व्यवस्था हो सकेगी।

v. **परित्यक्ता महिलाओं के लिए महिला आश्रम (स्वाधारगृह) :** परित्यक्या महिलाओं के लिए नए 208 आश्रमों को मंजूरी दे दी गयी है। बलात्कार तथा अत्याचार पीड़ित महिलाओं को इससे मदद मिलेगी। इन आश्रमों के माध्यम से 26000 महिलाओं को मदद दी जाएगी तथा उनके पुनर्वास का विशेष रूप से ध्यान रखा जायेगा।

vi. **राष्ट्रीय आहार मिशन (एनएनएम) :** बच्चों में पाए जाने वाले कुपोषण तथा बौनेपन के प्रमाण को 2022 तक 38.4 प्रतिशत से 25 प्रतिशत तक कम करने का लक्ष्य को सामने रखकर राष्ट्रीय आहार मिशन योजना बनाई गयी है। पहले चरण में 162 पिछड़े जिलों के 42 लाख बच्चों पर विशेष ध्यान दिया जायेगा। इस योजना के लिए 9000 करोड़ रुपयों का प्रावधान किया गया है। बच्चों, गर्भवती महिलाओं तथा युवतियों में अनीमिया के मामले तीन प्रतिशत से कम करने का लक्ष्य रखा गया है।

मा. प्रधानमंत्री मोदी जी की सरकार की तरफ से चलायी जा रही कुछ अन्य योजनाओं की सूची....

1. प्रधानमंत्री जन धन योजना।

2. प्रधानमंत्री आवास योजना।
3. प्रधानमंत्री सुकन्या समृद्धि योजना।
4. प्रधानमंत्री मुद्रा योजना।
5. प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना।
6. प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना।
7. अटल पेंशन योजना।
8. आयुष्मान भारत।
9. सांसद आदर्श ग्राम योजना।
10. प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना।
11. प्रधानमंत्री नेशनल न्यूट्रिशन मिशन/राष्ट्रीय पोषण मिशन।
12. प्रधानमंत्री ग्राम सिंचाई योजना।
13. प्रधानमंत्री गरीब कल्याण योजना।
14. प्रधानमंत्री जन औषधि योजना।

❍

9. मेरे सपनों का भारतः भारतीय नारी की दृष्टि से

भारत एक हमारा नहीं तो विधाता के सपनों की भूमि है। जैसे मा. अटलजी ने वर्णन किया है की यह केवल एक जमीन का टुकड़ा नहीं है, लेकिन यह एक जीता जागता राष्ट्र पुरूष है। यह वंदन की भूमि है। अभिनंदन की भूमि है। अर्पण की भूमि है। तर्पण की भूमि है। इस भारत का सपना हमारे दृष्टि से कैसा हो? हम सदैव वैभवशाली भारत की कामना करते आए हैं। भारत एक सामर्थ्यशाली राष्ट्र हो ऐसा हमने संकल्प किया है। लेकिन कुछ लोग तो राष्ट्रवाद को खत्म करने पर तुले हैं। जिनसे हमारा वैचारिक संघर्ष बार-बार चला आ रहा है। हम जिस वैचारिक धरोहर में राजनीतिक, सामाजिक काम करते हैं इस वैचारिक धरोहर की हमारी निष्ठा अटल रहने हेतु इस संकल्पना को ठीक से समझना बहुत जरूरी है। इसलिए हमारे सपनों का भारत यह विषय गहराई से सोचने का एवं समझने का विषय है। क्या है हमारे वैभवशाली राष्ट्र की संकल्पना? पिता के वचनों को पूरा करने हेतु सिंघासन पर न चढ़कर वनवास स्वीकार करने वाला श्रीराम जैसा आदर्श पुत्र, भाई की पादुकाएँ सिंघासन पर रख कर उसका राज्य चलाने वाला भरत जैसा आदर्श भाई, प्रतिकूल अवस्था में स्वराज्य स्थापना की चेतना जगाने वाली माँ जीजामाता जैसी माता, प्रजाहित दक्ष शिवाजी महाराज जैसा राजा, अपने स्वदेश के लिए स्वाभिमान को कायम रखने हेतु बलिदान देन वाली झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ऐसे कितने उच्चतम आदर्श इस संस्कृति ने हमें दिए हैं। इस कर्तव्यबोध को जीवनशैली में प्रदर्शित करने वाला समाज यह आज की जरूरत है। वैभवशाली तत्त्व और शर्मनाक वर्तमान ऐसी विसंगति के बजाए इन आदर्शों को अपने रोजमर्रा के आचरण में प्रदर्शित करने वाला भारत यह मेरे सपनों का भारत है। आदर्श केवल किताबों में एवं कथाओं में न रहते

हुए इन आदर्श मूल्यों को जीवन में जीने वाला समाज यह मेरे सपनों में जो भारत है उसकी पहली विशेषता है। भारतीय जीवनशैली में केवल मानव का नही तो जीव जंतुओं के कल्याण की कामना की गई है। हमारा जीवन व्यवहार इस कामना को पूरा करने हेतु होना चाहिए यह इस जीवनशैली की प्राथमिक आवश्यकता है। इस दृष्टि से भारतीयत्त्व के विचार को, जीवनशैली को केंद्र में रखकर जीने वाला देश अगर महासत्ता या वैभवशाली महासत्ता बनता है तो विश्व की मानवता चरम सीमा तक पहुँचती है। यह समाज किसी पूजा पद्धति का विरोध नही कर सकता। पूजा पद्धति की स्वाधीनता और उससे एक कदम आगे जा कर पूजा न करने का भी सम्मान यह इस देश की सांस्कृतिक धरोहर की विशेषता है। व्यक्ति विशेष को, शक्ति को, प्राणी को, चेतना को देवता का रूप दिया गया है। आदर्श जीवनशैली के लिए राह दिखाने वाले किसी भी व्यक्ति, प्रतीक, वस्तु, प्राणी की पूजा करना या किसी की भी पूजा न करते हुए आदर्श जीवनशैली का अनुसरण करना भी इस जीवनशैली में सम्मानित है। इतनी स्वाधीनता दुनिया के किसी भी कोने में, किसी भी जीवनशैली में नही है। यह विशाल दृष्टिकोण रखने वाला विचार अगर शक्तिमान होता है तो किसी भी समाज विशेष पर कोई अन्याय, दबाव, हिंसा जैसा व्यवहार होने का सवाल ही पैदा नही होगा।

इन आदर्शों का दायरा केवल मानवीय व्यवहारों तक सीमित नहीं है। व्यक्ति-समाज-सृष्टि एवं परमेष्टी इनका आपस में संतुलन एवं संवाद यह हमारे इस जीवनशैली की विशेषता है। समाज, सृष्टि और परमेष्टी यह व्यक्ति के शोषण का विषय नही हो सकते इनका पोषण करने का दायित्व भी व्यक्ति पर होता है। कर्तव्यबोध के बिना विज्ञान और विकास के कारण पर्यावरण की गंभीर समस्या उत्पन्न होती दिख रही है। हमारी संस्कृति ने प्राण लेने वाले डंक करने वाले सांप को भी देवता का रूप दिया है। नागपंचमी, दशहरा, वटसावित्री, तुलसीविवाह आदि अनेक कार्यक्रम हमारा सृष्टि से नाता जोड़ कर परमेष्टी के प्रति

हमारे कर्तव्यों का एहसास दिलाते हैं। इनका अनुसरण केवल श्रद्धा तक सीमित न रहते हुए उनके पृष्ठभूमि में जो उदात्त विचारों का परिप्रेक्ष्य है उसका बोध महिलाओं के चिंतन में होना चाहिए।

मेरे सपनों के भारत में जीवन का यह परिपूर्ण विचार केंद्र में रख कर जीवनशैली का अनुसरण करने वाला समाज और उसका नेतृत्त्व करने वाली महिला यह चित्र दिखायी देता है।

सम्यक विकास

समाज में भाषा, प्रान्त, लिंग जैसे किसी भी विषय पर विषयमता का व्यवहार हमारे सपनों के भारत में मंजूर नही है। स्त्री पुरूष समानता के बारें में हमारा दृष्टिकोण साफ होना चाहिए। हर बाला देवी की प्रतिमा, बच्चा-बच्चा राम है ऐसा विचार इसका केंद्र है। हमारे सपनों के भारत में हर महिला अत्याचार से मुक्त हो। स्त्री भ्रूण हत्या से लेकर दहेज मुक्त समाज तक और शिक्षा से लेकर रोजगार तक स्त्री पुरूष समानता का चित्र जीवन में खड़ा करने तक इसका गहराई से विचार होना चाहिए। लिंग भेद के व्यवहार के चलते महिलाओं की संख्या पुरूषों की तुलना में कम होना यह स्वस्थ समाज का चित्र नही है। मेरे सपनों के भारत मे इस भेद को कोई स्थान नही है। पूजा पद्धति के आधार पर, प्रान्त, भाषा के नाम पर संकुचित स्वार्थ को सामने रखकर जो संघर्ष खड़े किए जाते हैं उन्हें मिटा कर कदम से कदम मिला कर चलने वाला समाज यह मेरे सपनों के भारत का चित्र है। सम्यक विकास यह हमारे सपने में बसने वाले भारत की विशेषता है। सम्यक विकास, सम्यक अवसर, सम्यक सम्मान यह हमारी विशेषता है। इसलिए भाजपा की सरकार सबका साथ, सबका विकास इसी विचार पर चलती है। पैर में अगर कुछ वेदना होती है तो आँखों में पानी भर आता है ऐसी समरसता समाज में होना यह हमारा सपना है। हमारे खान-पान, रहन-सहन, वेष, भाषा में कितनी भी विविधता हो लेकिन हमारे अंदर बहने वाला भावात्मक रस, मानवता का गंध, आदर्शों का तत्त्व एक हो यही समरसता है। रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा, रोजगार

की संधी, संस्कार इनकी समानता के साथ सामाजिक सम्मान सब को समान होना यह हमारे सपनों के भारत की विशेषता है। नि:श्रेयस आज कल एक चिंता का विषय बार-बार निजी स्तर पर चर्चा में आता है, कि दिन ब दिन हमारा समाज खुदगर्ज बन रहा है। भूमंडलीकरण के पश्चात् यह अनुभव हर क्षेत्र में आ रहा है। जीवन के सफलता के सारे संदर्भ मानो बदल गये हैं। कुछ भी कर के जीवन में पैसा कमाना यही सफलता का लक्ष्य बन गया है। संसाधनों को जुटाना यही लक्ष्य बन चुका है। हमारा समाज, हमारा देश और उसके प्रति हमारा दायित्त्व यह विचार हमसे दिन ब दिन कोसो दूर जाता दिखाई दे रहा है। यह हमारी संस्कृति की पहचान नही है। हम सत्य एवं मानवता की जीत के लिए हड्डियाँ गलाने वाले दधिची के अगर वंशज है तो हम खुदगर्ज कैसे बन सकते हैं? क्या हमारा जीवन केवल अपना घर, परिवार और अपना टीवी इतना ही सीमित है? इस सीमित विचार के चलते देशभक्ति, समाज प्रेम मानो लुप्त होते जा रहे हैं। यह चित्र हमारे सपनों के भारत का नही है। नि:श्रेयस कर्मों को अहम मानने वाला समाज यह हमारी विशेषता होनी चाहिए। हमारे सपनों के भारत का समाज अपने खुद के लिए केवल जीवन व्यतीत करने वाला समाज नही है तो अपने देश के प्रति, समाज के प्रति अपने दायित्व को जान कर उस का निर्वहन करने वाला समाज यह हमारी कामना है। इसकी शुरूआत हमें अपने आपसे करने का प्रयास करना चाहिए। विज्ञान निष्ठा हमारे प्रगति का आधार अंधश्रद्धा, रूढ़ी न रहते हुए विज्ञाननिष्ठ समाज का हमारा सपना है। वैज्ञानिक प्रगति में हमने विश्व में पहचान बनायी है। विश्व में सर्वाधिक युवा इस देश में हैं। क्रिकेट मैच हो या मा. प्रधानमंत्री मोदी जी का प्रवास हो विश्व के हर कोने में अब भारत का तिरंगा लहराता दिखाई देता है। विश्व के हर कोने में भारतीय व्यक्ति का अस्तित्त्व हमारे वैज्ञानिक, बौद्धिक समृद्धता की निशानी है। हमारे युवावर्ग ने विज्ञान, तकनीक, संगणकीय कौशल्यों को इतना विकसित किया और उस के बल पर दुनिया का हर कोने में अपनी जगह बनायी है। तांत्रिक

और वैज्ञानिक प्रगति में कृषि क्षेत्र से ले कर स्पेस रिसर्च तक हमने एक उँचाई तय कर रखी है। कल्पना चावला से ले कर इस क्षेत्र में भारतीय महिला अग्रसर हुयी है।

महिला विकास में सशक्तिकरण और स्वावलंबन की प्रक्रिया आवश्यक है । महिलाओं के जीवन में रचनात्मक विकास की संभावनाएँ भी बढ़नी चाहिए। उन्हें खुद के अधिकार, स्वतंत्रता अथवा गरिमापूर्व जीवन व्यतीत करने के लिए अनुदान या संरक्षण ही काफी नहीं है।

अबला जीवन हाय। तुम्हारी यही कहानी।
आंचल में है दूध, आँखो में पानी।

इन पंक्तियों के स्थान पर निम्नलिखित पंक्तियाँ चरितार्थ होंगी, ऐसा होगा मेरे सपनों का भारत।

आंचल में संकल्प, नही आँखो में पानी ।
सबला लिखनी तुझको, अब तो नई कहानी ।

'मेरे सपनों का भारत' और देश के हर नारी के सपनों का भारत समरसता पूर्ण, विज्ञाननिष्ठ, भेदरहित, सामर्थ्यशाली भारत है। यहाँ माँ जिजाऊ भी हैं और झाँसी रानी लक्ष्मी बाई भी है। यहाँ कैप्टन लक्ष्मी भी है और यहाँ कल्पना चावला भी है। यहाँ अहिल्यादेवी होलकर है, सावित्री बाई फुले है और भगिनी निवेदिता भी है। यहाँ की नारी दुष्टों को शासन करते समय काली माता का रूप है और जगत्पालक के रूप में यह मूर्त अन्नपूर्णा भी है। हमारे सपनों का भारत परिपूर्ण, पोषण करने वाला, शक्तिसंपन्न, विकासशील, विज्ञाननिष्ठ, समरतापूर्ण भारत है।

इसे खड़ा करने के लिए स्वार्थ छोड़कर देश का चिंतन करने वाला, विश्वकल्याण के लिए त्याग करने वाला समाज खड़ा करना है।

देशभक्ति ले हृदय में
हो खड़ा यदि देश सारा
संकटों पर मात कर यह
राष्ट्र विजयी हो हमारा।

❍

10. मीडिया/सोशल मीडिया संवाद

जैसा कि आप सब जानते हैं कि समाज जीवन के अन्य क्षेत्रों की तरह राजनीतिक क्षेत्र में भी मीडिया के प्रभाव का विस्तार हुआ है। हर घर में समाचार पत्रों की दस्तक हो गई है। हर घर में टीवी और हर हाथ में लैपटॉप है। प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक के साथ सोशल मीडिया/डिजिटल मीडिया का हस्तक्षेप प्रभावकारी भूमिका में है। इसमें अपना दखल बढ़े, इसकी कोशिश होनी चाहिए। संचार की आधुनिक तकनीकों में दक्षता जरूरी है, **गूगल, फेसबुक, इंस्टाग्राम, ट्वीटर** जैसे दसियों लोकप्रिय वेबसाइटों का इस्तेमाल कर पार्टी की छवि में चार चांद लगा सकते हैं।

नियमित संपर्क में रहें

भाजपा के हर कार्यकर्ता को मीडिया से न केवल निकट का संपर्क रखना जरूरी है वरन पार्टी और अपनी छवि को जनता के बीच चमकाने के लिए उसका अधिकतम इस्तेमाल करना है। इसके लिए मीडिया से नियमित संपर्क अपने स्वभाव का हिस्सा बनाएं। आप सब जानते हैं कि भाजपा अन्य दलों से भिन्न है। विचारधारा आधारित पार्टी है। पार्टी के विस्तार के साथ ही उसकी वास्तविक छवि जनता के सामने आये, इसके लिए जरूरी है कि आप सभी व्यक्तिगत स्तर पर अपनी विचारधारा, केंद्र सरकार और राज्य सरकारों के कामकाज के बारे में गहराई से जानें। उतना ही जरूरी यह भी है कि अपने विरोधी राजनीतिक दलों के बारे में भी जानें ताकि उनको तार्किक जवाब देकर अपनी पार्टी को आगे बढ़ा सकें। सबसे पहले प्रिंट मीडिया पर ध्यान देना इसलिए जरूरी है ताकि मीडिया की आवश्यकताओं के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकें। मसलन प्रेस को भेजी जाने वाली सामग्री बिल्कुल तथ्य पर आधारित हो, कम शब्दों में हो, प्रेस विज्ञप्ति बनाते

समय कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक बात कहने का अभ्यास जरूरी है। पत्रकार वार्ता करते समय सभी छोटे-बड़े मीडिया संस्थानों के साथ ही टीवी चैनलों और डिजिटल मीडिया से जुड़े पत्रकारों को सही सूचना भेजे और पत्रकार वार्ता में उनकी उपस्थिति सुनिश्चित करें। यदि ऐसा कर सके तो मानिए आपका आधा काम हो गया।

पत्रकारों से वार्ता में सतर्कता बरतें

यह भी सुनिश्चित करें कि सभी पत्रकारों को उनकी जरूरत के अनुसार प्रेस विज्ञप्ति, फोटोग्राफ, ऑडियो, वीडियो वीजुअल्स, सीडी, डीवीडी, पेन ड्राइव आदि समय पर पहुँच जाए। जिला, प्रदेश और राष्ट्रीय स्तर पर यह काम बेहद जरूरी है। समाचार चैनलों से बातचीत करते समय अति सावधानी की जरूरत है। ऑफ दि रिकॉर्ड तो कतई बात नहीं करनी चाहिए। बातचीत करते समय पार्टी लाइन का अवश्य ध्यान रखें। व्यक्तिगत विचार जैसी कुछ भी न बात करें। चैनल पर शब्दों का चयन करते समय बहुत सावधानी बरतें। सजीव प्रसारण (लाइव) में तो अति सतर्कता की जरूरत है। उत्तेजित तो कतई न हों। पूरे आत्मविश्वास से बात करें। मीडिया का सहयोग पाने के लिए इस बात का ध्यान अवश्य रखें कि आपको क्या कहना है, उतना ही जरूरी है इस बात का ध्यान रखना कि क्या नहीं कहना है। इस मामले में पत्रकारों या मीडिया संस्थानों से परिचय या दोस्ती बहुत लाभकारी होती है। पत्रकार को अपना नंबर, मोबाइल नंबर, घर का नंबर, ई मेल आदि बेहिचक दे दें। सदैव मीडिया के साथ हमारा सौहार्द बना रहे इसकी हर कोशिश करनी होगी ।

तथ्यों पर ध्यान दें

सामान्य रूप से पत्रकार तथ्यों की खोज में रहता है। लिहाजा इस आदत का आप लाभ ले सकते हैं। अपनी पार्टी के बारे में सभी

सकारात्मक सूचनाएँ सही और तथ्यों के साथ उसको उपलब्ध करा सकते हैं। इससे संबंधित पत्रकार के साथ आपके निजी रिश्ते भी मजबूत होंगे। आंकड़ों पर विशेष ध्यान दें। सरकारी रिकॉर्ड को संजोकर रखें। केंद्र और राज्यों द्वारा समय-समय पर जारी विषय विशेष पर रिपोर्टें, संवैधानिक संस्थाओं की रिपोर्ट और राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय एजेंसियों की रिपोर्ट पर ध्यान रखें। सूचना के अधिकार का इस्तेमाल करने में अधिक से अधिक रुचि रखें। इंटरनेट की मदद सबसे अधिक कारगर होगी लिहाजा उसके माध्यम से हर समय अपने आपको अपडेट रखें। गूगल से जुड़े रहें। आपका काम सरल हो जाएगा। मीडिया में प्रकाश्य सामग्री (कंटेंट) को 'राजा' (किंग) कहा जाता है। यह जितना मजबूत होगा, आपका समर्थन उतना ही बढ़ेगा और राजनीतिक विस्तार में उतना ही मददगार हो सकता है। इसलिए पार्टी से संबंधित कोई भी विषय चलताऊ तरीके से न लें, उसकी पूरी पृष्ठभूमि समझें, गहराई से अध्ययन करें, फिर उसे मीडिया के सामने परोसें। सबसे पहले तो आपको ध्यान रखना होगा कि कौन आपका श्रोता है, कौन पाठक है, कौन आपका लक्ष्य (टारगेट) है।

डिजिटल मीडिया पर करें फोकस

कंटेंट (सामग्री) तैयार करने के लिए एक शोध टीम का भी गठन किया जा सकता है। इस टीम में सोशल मीडिया, डिजिटल मीडिया में रुचि लेने वाले युवाओं को अवश्य जोड़ें। सोशल नेटवर्किंग साइट पर आपका ध्यान हर समय रहना चाहिए। इसके माध्यम से पार्टी और आपकी खुद की छवि देश-विदेश में निखरेगी। सोशल मीडिया जगत में आप सभी ऑडियो-वीडियो टूल्स को ट्वीट या पोस्ट के रूप में इस्तेमाल कर सकते हैं। टैगिंग आपके लिए एक महत्त्वपूर्ण औजार है जो आपके संदेश को कई गुणा प्रसारित कर सकता है, वीडियो आने वाले समय में इंटरनेट की दुनिया में 80 प्रतिशत उपभोक्ताओं के बीच

लोकप्रिय हो सकता है। ऑनलाइन वीडियो सोशल मीडिया संवाद का सबसे महत्त्वपूर्ण माध्यम बन गया है। मानकर चलिए कि फेसबुक जैसी लोकप्रिय फ्री सोशल नेटवर्किंग वेबसाइट का उपयोग कर अपना संदेश पूरी दुनिया में मुफ्त में पहुँचा सकते हैं। इसी के साथ **ट्वीटर** जैसी फ्री माइक्रोब्लॉगिंग सोशल मीडिया साइट का इस्तेमाल करें, ध्यान रखें कि वहाँ सधे शब्दों में अपनी बात कहनी होती है। **गूगल या गूगल+** साइट को अपना मित्र बना लें, आपका काम सरल हो जाएगा। इसका उपयोग कर अपने दल की बात को विस्तार से बता सकते हैं। **वाट्सएप** सुविधा हर एंड्रायड और अन्य स्मार्ट फोन पर उपलब्ध है। संदेश देने का प्रभावी माध्यम है। इसका बहुतायत में इस्तेमाल करें। आपके लिए **यू-ट्यूब** का इस्तेमाल एक साथ हजारों लोगों से जुड़ने का माध्यम बन सकता है। सोशल मीडिया जनता के बीच अधिकाधिक लोकप्रिय हो रहा है। इसे हमारी नीतियों को जनता तक पहुँचाने का माध्यम बनाना ही होगा। सोशल मीडिया प्रायः मुफ्त होता है। न्यूनतम लागत में आप अधिकतम लोगों तक पहुँच सकते हैं। कभी-कभी मुख्य मीडिया में आपकी या पार्टी की कवरेज ठीक से नहीं हो पाती है। ऐसे में आप सोशल मीडिया का उपयोग कर उसकी भरपाई कर सकते हैं। आजकल लोग हर समय ताजा खबरों की इच्छा रखते हैं। ऐसे में पार्टी के बारे में ताजा समाचार देकर उनकी इस आदत का उपयोग अपने हित में कर सकते हैं।

ग्रामीण इलाकों पर ध्यान देने की जरूरत

मीडिया में स्थान बनाने के लिए ग्रामीण इलाकों में काम करने वाले कार्यकर्ताओं के सामने बड़ी कठिनाई होती है। कारण साफ है। मीडिया की पहुँच अभी गाँवों तक कम है और कार्यकर्ता भी अभी उससे दूर ही रहते हैं। वहाँ अपनी पहुँच बढ़ाने की जरूरत है। त्रिस्तरीय पंचायतों की भूमिका बढ़ने के साथ ही पार्टी का दखल भी वहाँ बढ़ा है। इसलिए कार्यकर्ता अपने को तैयार करें। पंचायतें (ग्राम पंचायत, क्षेत्र पंचायत

और जिला पंचायत) तीसरी सरकार कही जाती हैं। विकास में उनकी बड़ी भूमिका होने वाली है। विकास को पटरी पर लाने के लिए मीडिया का सहारा लें। जरूरी है कि जिले से लेकर कस्बों तक फैले मीडिया से जुड़े रिपोर्टरों को निजी तौर पर साधें, उनको महत्त्व दें। भाजपा की विकास योजनाओं और पार्टी के कार्यक्रमों को उन तक पहुँचाएँ। गाँवों और कस्बों में भी हर हाथ में एंड्रायड फोन हैं, सोशल मीडिया का बेहतर इस्तेमाल कर सकते हैं। डिजिटल मीडिया भी आपकी पहुँच से बाहर नहीं है

शहरी क्षेत्रों को केंद्र बनाएँ

शहरी निकायों तथा नगर निगम, नगरपालिका और नगर पंचायतों में भाजपा का बहुत तेजी से प्रवेश हो रहा है। लिहाजा कार्यकर्ता यहाँ भी पूरी गंभीरता से लगें। बढ़ते शहरीकरण के कारण इनका विस्तार होना ही है लिहाजा भविष्य को ध्यान में रखते हुए इन पर फोकस करने की जरूरत है। शहरी इलाकों में पत्रकार काफी सक्रिय रहते हैं। हमें भी सक्रियता से उनसे संपर्क बनाकर लाभ लेना चाहिए। कार्यशैली वही कि उनसे रिश्ते मजबूत करें और अपने तथा अपने दल के बारे में उन्हें अपडेट करते रहें। उनको किसी तरह की जानकारी की जरूरत हो तो तत्काल उपलब्ध कराएँ। यहाँ भी सोशल और डिजिटल मीडिया का इस्तेमाल कारगर होगा ही। ❍

भारतीय जनता पार्टी

6 ए, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली- 110002

फोन : 011-23500000, फैक्स : 011-23500190

ISBN 978-93-88310-18-5

9 789388 310185